तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : ५ वर्ष : ११ १-१५ मार्च १९८३

दीवाना



दीवाना



का १६ मार्च १९८३ का अंक

होली विशेषांक

मूल्य केवल 2.00 रु०

● होली के रंगों में सराबोर फीचर ● हर पृष्ठ पर नया हंगामा ● काका के कारतूस ● चिल्ली का प्रेम पत्र ● दीवानी चिपकी ● बढ़े हुए १६ रंगीन पृष्ठ ● हास्य की नई-नई कहानियां !

और साथ ही सभी स्थाई स्तम्भ

सिलबिल-पिलपिल, फैण्टम, राजा जी, चिल्ली लीला, बन्द करो बकवास, मदहोश, बोलते अक्षर, क्यों और कैसे, गरीब चन्द की डाक, आपके पत्र, खेल-खेल में, मोटू-पतलू, वर्ग पहेली और हंसा-हंसाकर पेट में बल डाल देने वाले नये-नये चुटकुले।

इनके साथ ही पढ़ने को मिलेंगी हास्य-व्यंग्य की नई-नई कहानियां और अन्य नये फीचर

इतनी सामग्री आपको किसी अन्य एक ही पत्रिका में एक साथ नहीं मिल सकती। यही कारण है कि लाखों परवानों का दीवाना बच्चों, युवकों और बूढ़ों में एक समान लोकप्रिय है।

एजेण्ट से कह कर अपनी कापी अभी से सुरक्षित करा लीजिये।

प्रेम पत्र

प्रिय अटल

तुम भी हैरान होंगे कि तुम्हारे दीवाने का इतने साल बाद प्रेम-पत्र आज तुम्हारे हाथ में कैसे आया ? बान ही कुछ ऐसी है कि तुम्हारे पर प्यार उमड आया । जब तुम्हारे अपने निक्कर धारी तुम्हारे नहीं रहे तो हम जैसे दीवाने कद्रदान ही तुम्हारे को सहारा दे सकते हैं ।

मैं तुम्हारी तस्वीर की हमेशा पूजा करता हूं पर आज तक तुमने अपनी फोटो निक्कर में नहीं ि त्रचवायी क्या कारण है ? जबकि तुम्हारे और साथी निक्कर कमीज और टोपी का भरपूर प्रदर्शन करते हैं । क्या यह सच है कि तुम्हारी पार्टी के अन्दर दो यूनीफार्म हैं । पिछले दिनों दिल्ली में बहुत ठंड पड़ रही थी, कहीं ऐसा तो नहीं कि ठंड कम करने के लिए तुम्हारी दोनों यूनीफार्मों में गरमा-गरमी हो गई हो । कांग्रेसी तो रस्साकशी में माहिर थे ही अब तो तुम्हारी भाजपा भी खूब प्रैक्टिस कर रही लगती है । दिल्ली के मैच में तुम्हारी टीम के नतीजे से लगता है कि आगे आने वाले मैचों में भी ये खूब नाम कमायेगी ।

प्रिय अटल मेरी सलाह मानो तो तुम धोती निक्कर का विवाद छोड़कर रैफरी बन जाओ । तुम्हारे मुंह पर सीटी खूब फबेगी । कृपया एक फोटो अपने दीवाने को जरूर भेज देना । तुम्हारी पुरानी फोटो खराब हो गई है ।

तुम्हारा प्यारा

चिल्ली

ली अंक के साथ गुलाल का एक पैकेट मुफ्त प्राप्त कीजिये

मुख पृष्ठ पर

मिला मैडल निशाने बाजी का
नवम् एशियाड बयासी में
अब तैयारी दशम् एशियाड की
जो होगा कोरिया सियोल में।
कोई न होगा इसका सानी
गठरी में बांधो बात यह
आठ घंटे की डेली प्रैक्टिस
है राज की बस बात यह ॥

दीवाना

अंक : 5 वर्ष : 19 1-15 मार्च 1983

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता

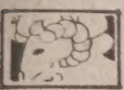
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

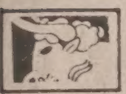

यह अखबार वाला मेरे विरुद्ध क्या ऊट पटांग लिखता है । दिल करता है इसे गोली से उड़ा दूं । हाथी के पैरों तले कुचलवा दूं मेरे द्वारा प्रेस को दी गयी आजादी का नाजायज फायदा उठा रहा है ।
लाल झंडा
लिखता है, "राजा चोर है । जनता को लूटता है ।"
जब मैं इंगलेंड के दौरे पर गया था तो वहां की हालत देख मेरा दिमाग खराब हो गया था । पता नहीं मुझे क्या सूझी थी जो अपने राज्य में प्रैस को स्वतंत्रता दी ।
कुछ करना पड़ेगा ।
उस सम्पादक के बच्चे को एक करारा धमकी भरा खत लिखो कि उसके रौंगटे खड़े हो जायें । लिखना चोर मैं नहीं तेरा बाप, तेरा नाना होगा ।
और एक यह प्राइवेट बात है खड़गसिंह, पड़ोसी राज्य की राजकुमारी पद्मा ने मुझे खत लिखा है कि तुम भय्या के राज्याभिषेक पर अतिथि बनकर आए थे जाते हुए मेरा दिल चुरा कर ले गए हो—चोर—
मुझे पता नहीं लग रहा है क्या उत्तर लिखूं । मैंने कभी प्रेम-पत्र नहीं लिखा—प्रेम-पत्र के साथ हीरे की अंगूठी और लाल गुलाब का फूल भेजना है ।
आप चिन्ता न करें हुजूर—प्रेम-पत्र मैं लिखूंगा आपकी तरफ से । मैंने जवानी के दिनों मुन्नी भटियारिन को बहुत से प्रेम-पत्र लिख रखे हैं ।
खड़गसिंह आजकल राजा का चेहरा खिला-खिला नजर आता है । अन्दर ही अन्दर क्या लड्डू फूट रहे हैं ?
राजकुमारी पद्मा से इश्क चल रहा है ।
और तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ क्यों नजर आ रहा है ।
मेरे धड़ से गर्दन उतरने का खतरा है । मैंने पत्रों को भेजने में गड़बड़ कर दी । लाल गुलाब, अंगूठी और प्रेमपत्र लाल झंडा के सम्पादक को भेज दिया और धमकी भरा पत्र राजकुमारी पद्मा को ।

आपका भविष्य

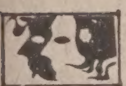
पं॰ कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं॰ हंसराज शर्मा



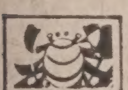
मेष : कामकाज की व्यस्तता में दिन अधिक व्यतीत होंगे, सप्ताह पहले से कहीं अधिक लाभप्रद रहेगा, बुद्धि बल द्वारा बिगड़े काम बना लेंगे, नई विचार-धारा से उन्नति एवं सुधार, लाभ बढ़ेगा,



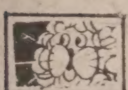
वृष : सप्ताह अच्छा है, स्थाई कामधन्धे लाभ देंगे सामने अनेक विघ्न आएंगे लेकिन प्रयास एवं परिश्रम करने पर आप सफलता प्राप्त कर लेंगे, शत्रु दबे रहेंगे, मानसिक चिन्ता अकारण ही रहेगी।



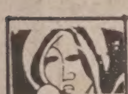
मिथुन : पराक्रम में वृद्धि, शत्रु हार मानेंगे, सप्ताह उन्नति एवं सुधार का प्रतीक है, अप्रिय घटना या कठिनाई भी आपकी प्रगति को रोक नहीं सकेंगे, कुछ गम्भीर उलझनें सुलझा लेंगे।



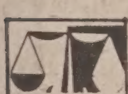
कर्क : नया काम शुरू करना अभी ठीक नहीं, स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहेगा, सप्ताह पहले से अच्छा है परन्तु दीर्घकाल से चली आ रही समस्याएं अभी पीछा न छोड़ेंगी।



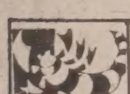
सिंह : इन दिनों व्यर्थ की उलझनों में समय व धन अधिक खराब होगा, मानसिक तनाव भी बना रहेगा, लाभ होकर खर्चा काफी होगा, कोई खास खबर मिलेगी, व्यापार से यथार्थ लाभ।



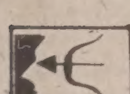
कन्या : सप्ताह पहले से अच्छा है, प्रयास करने पर उन्नति होगी और कठिन कामों में भी सफलता मिल जाएगी, धन की चिन्ता पेश आएगी लेकिन शीघ्र ही दूर हो जाएगी।



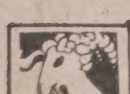
तुला : कारोबार में सुधार होकर परिश्रम का फल प्राप्त होगा, घर-परिवार की समस्याएं रहेंगी, शारीरिक कष्ट, ज्यादा खर्चा होने से परेशानी, राजकीय कामों में विजयी रहेंगे।



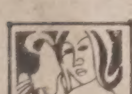
वृश्चिक : इन दिनों संघर्ष काफी रहेगा, सेहत की ओर ध्यान दें, खर्च पर नियंत्रण रखें वर्ना अधिक तंगी पेश आएगी, कोई एक प्रिय मित्र आपकी सहायता करेगा, लाभ भी होगा।



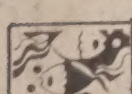
धनु : काम धन्धों में सुधार होगा और घरेलू वातावरण भी सुधरता महसूस होगा, सप्ताह लाभप्रद रहेगा, अनेक उलझनों और समस्याओं से छुटकारा पाएंगे, कारोबार बढ़ेगा।



मकर : सप्ताह संघर्षमय होने के साथ-साथ लाभप्रद भी कहा जा सकता है, यात्रा सफल, अच्छी आमदनी, नई वस्तुओं की खरीद लेकिन विशेष व्यय एवं भागदौड़ से बच पाना संभव नहीं।



कुम्भ : अपनों से सहयोग मिलेगा, रोजी-रोजगार में वृद्धि होकर धन लाभ के चांस मिलेंगे, वाद विवाद से बचें, अफसरों से मेलजोल, कारोबार की दशा पहले से काफी अच्छी होगी।



मीन : सप्ताह पहले से अच्छा है परन्तु कुछेक पुरानी समस्यायें अभी भी बनी रहेंगी, प्रयत्न एवं परिश्रम करने पर कुछ विरोध कार्य बन सकेंगे जिनसे लाभ भी होता रहेगा।

आपके पत्र

दीवाना एक बहुत बढ़िया व अच्छी सामग्री से पूर्ण पत्रिका है। दीवाना में केवल एक ही कमी खटकती है। वह यह कि इसमें आप रंगीन चित्रकथायें नहीं देते। इसमें खेल पृष्ठ यदि बढ़ा दिये जायें तो दीवाना में चार चांद लग जायेंगे। —**राहुल गोदीका, जयपुर**

अप्रैल के प्रथम अंक (दीवाना अंक 7) से आपको दीवाना नये रंग रूप व नई साज-सज्जा में मिलेगा। —सं.

अंक 3 काफी इन्तजार के बाद मिला, मुख पृष्ठ बहुत अच्छा लगा। भगवान का केन्द्रीय सचिवालय, चना कुरमुरा, हंसना मना है, मोटू-पतलू बहुत अच्छे लगे। खेल-खेल में कपिल का फोटो देख कर खुशी हुई। राजा जी अच्छा नहीं लगा, क्योंकि इसमें उनके ठिगने होने का जिक्र नहीं आया। अच्छे प्रोग्रामों के लिए बधाई। —**शिवकुमार**

दीवाना फरवरी अंक पढ़ने को मिला, कुछ बदला-बदला लगा। पता नहीं क्या बात है हम दीवाना का इस कदर इन्तजार करते हैं जैसे इस बार हमारे क्रिकेट प्रेम की दीवानगी के प्रमाण, भगवान का केन्द्रीय सचिवालय बहुत ही पसन्द आया, इमरान व कपिल देव की तुलना ज्ञानवर्धक थी। इस बार का मुख पृष्ठ देखने लायक था। मैंने तो उसको अपनी एलबम में लगा लिया है। —**अशोक खुराना, कलनौर**

दीवाना अंक 3 मिला। दुकानदार ने आवाज दी, दीवाना के दीवानों, दीवाना आ गया। तो झट मैंने दीवाना उठाया। प्रथम पृष्ठ ही मन को भा गया था सो वहीं खड़े-खड़े पूरी पत्रिका ही पढ़ डाली, मोटू-पतलू हेरा फेरी नहीं और लल्लू पढ़कर मेरी हंसी छूट रही थी। लोगों की निगाहें मेरी तरफ थीं और मेरी निगाहें दीवाना में। मैंने सोचा बाकी घर पढ़ेंगे। बुलबुल कुटी का तीसरा भाग पसन्द आया। हमारे क्रिकेट प्रेम की दीवानगी के प्रमाण क्रिकेट प्रेमियों पर व्यंग्य है। भगवान का केन्द्रीय सचिवालय पढ़कर हंसी देर तक नहीं रुकी। —मुरलीचन्द्र सिंह जाड़ा, कृष्णा पार्क

दीवाना का अंक 3 प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ आकर्षक लगा। मोटू-पतलू की चित्रकथा पढ़ कर दिल बाग-बाग हो उठा। राजा जी व मदहोश पढ़कर हंसी मुख से फूटे बिना न रह सकी। गरीबचन्द की डाक व चुटकले पढ़ कर मजा आ गया। इसके अतिरिक्त अन्य सभी सामग्री रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजन से भरपूर थी। —**नवनीत तलवार, जयपुर**

दीवाना फरवरी का पहला अंक फिर देरी से ही प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ की तारीफ के तो शब्द ही नहीं हैं। कहानी अभिलाषा (जतन) इम्पोर्टेरिया रेस्तरां (के. पी. सक्सेना) हास्यकथा मुझे तथा सारे परिवार को बहुत ही पसन्द आई। मोटू-पतलू हेरा-फेरी नहीं, लल्लू, हमारे क्रिकेट प्रेम की दीवानगी के प्रमाण, भगवान का केन्द्रीय सचिवालय, स्तम्भों के फीचर तथा कहानी बहुत ही अच्छी रही। कृपया फिल्मी ड्रामा जरूर दिया करें, इस स्तम्भ को स्थाई बना लें। क्या बाल एक रात में काले से सफेद हो सकते हैं, में जो जानकारी दी गई वह बहुत ही लाभप्रद थी। इस अंक की जितनी तारीफ की जाए वो कम है। —गुरमीत सिंह मीता, नई दिल्ली

दीवाना का अंक 3 प्राप्त हुआ। दीवाना फ्रेंडस क्लब में अपनी फोटो छपी देखकर खुशी हुई परन्तु गरीबचंद की डाक में अपना प्रश्न न पाकर दुख हुआ। 'मोटू-पतलू' ने तो हंसा-हंसाकर दीवाना कर दिया। 'भगवान का केंद्रीय सचिवालय' नामक फीचर भी हास्यप्रद लगा। अन्य स्थाई स्तम्भ भी रोचक लगे। सम्पादक जी, मैंने एक कहानी लिखी है, क्या मैं उसे दीवाना में प्रकासित करवा सकता हूं ? और क्या कोई फीस भी देनी होगी। —तजेन्द्र भाटिया, दिल्ली

आप अपनी कहानी हमें भेज दीजिए यदि पसन्द आई तो उसे दीवाना में छाप दिया जाएगा। इसके लिए कोई फीस नहीं देनी पड़ती। हां, कहानी की सूचना पाने के लिए उसके साथ अपना पता लिखा एवं पर्याप्त डाक टिकट लगा लिफाफा अवश्य भेजें। सं॰



लल्लू
मोलिना लड़की तो अच्छी है। मैं उसको प्यार भी करता हूं लेकिन वह शादी के विरुद्ध है शादी के नाम से ही चिढ़ती है। शी इज अगेन्स्ट मैरेज। समझ में नहीं आता उसे किस तरह राजी किया जाए।
आखिर कोई न कोई तरीका तो होगा ही। देर या सवेर तो उसे शादी करनी ही पड़ेगी। उम्र भर कुआरी थोड़े ही बैठी रहेगी।
अहा यह पिल्ले तो बड़े प्यारे हैं। काकर स्पेनियल लगते हैं।
बिकाऊ
क्यों न एक पिल्ला ले लिया जाए और उसे मोलिना को दिखाया जाए···
हो सकता है इस पिल्ले को देख कर मोलिना के अन्दर सोया हुआ मातृत्व जाग जाए और वह मुझ से शादी करने को तैयार हो जाए।
हाय हाय··· कितना प्यारा पिल्ला है। प्यारु पिल्लु वऊ वऊ
लगता है तरकीब काम करने लगी है।
पुकू ऽऽऽऽऽ भू भू भू···वूऽऽऽऽऽ चुक्कू—पुक्कू···कु कु आ ऽऽऽऽ पु लू लू लू···मोतू मोतू···गोलू मटोलू भऊ भऊ भऊ तु तु तु तु··ऊ ऽऽऽऽऽ
हुलू ऽऽऽऽ छोतू चिपकू लू रु रु रु रु चूऽऽऽऽ बल्लेऽबल्लेऽऽबल्ले ऽऽऽ दुधू पिऊ लूऽऽकू कु
छोटू सू कु कु कु···कुकुर मुतूऽऽ बुऽलूऽऽ वा वाऽऽऽऽ यूऽऽऽक्यूटूऽऽऽ
लगता है इसनें मोलिना के अन्दर का सोया हुआ मातृत्व नहीं जगाया बल्कि सोया हुआ मूर्खत्व जगा दिया।

काका के कारतूस

अटपटे प्रश्न दीवानों के
चटपटे उत्तर काका हाथरसी के



रमेश गुप्ता 'दीवाना'—नई दिल्ली

प्र० : काका जी कारतूस क्यों बन्द कर दिए हैं, पिस्टल ढीली हो गई है या कारतूस समाप्त हो गए हैं ?

उ० : ससुराल में फंस गए थे डियर, वहां—
सात सहेलियां खड़ी खड़ी, आंख चलायें बड़ी बड़ी,
काका कविता लिखने बैठें, कलम पकड़लें घड़ी घड़ी ।

पुन्नाराम गर्ग—नीम दरवाजा, भरतपुर

प्र० : आन्ध्र में कांग्रेस आई, पावर में क्यों नहीं आई ?

उ० : इल्मी से फिल्मी बड़ा, जय वोटर महाराज
अभिनेता, नेता बना, लूटा तख्तो-ताज ।

दीनदयाल 'जिज्ञासु'—रतलाम

प्र० : दिल्ली के चुनावों में भाजपा क्यों पिछड़ गई ?

उ० : अटल 'अटल' होकर रहे, पार्टी के सिरमौर,
दिल्ली के आंसू पूछे, जीत लिया इंदौर ।

सुनील माहेश्वरी—अमरोहा

प्र० : शादी शुदा लड़की से प्रेम करना उचित है क्या ?

उ० : क्वारी हो या विवाहित, बुढ़िया हो या ज्वान,
प्यार धड़ाधड़ कीजिए, छोड़ मान-अपमान ।

विनय भाणावत—उदयपुर (राजस्थान)

प्र० : बातचीत के दौरान किसी लड़की को हंसी आ जाए तो ?

उ० : सम्हाले से नहीं सम्हले, जवानी उसको कहते हैं,
बात करते जो हंस जाए उसे हम 'यस' समझते हैं ।

आइल डाले—नेहरू गंज, इटारसी

प्र० : काका या संसार में, ऐसे भी हैं लोग,
काम धाम कुछ भी नहीं, खाएं मोहन भोग ।

उ० : अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम,
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम ।

अगलेन्दु शुक्ल—मदियाकटरा, आगरा

प्र० : आप कौन-सी पार्टी को वोट देते हैं काका ?

उ० : किसी पार्टी से नहीं, काका का सम्बन्ध,
टी-पार्टी मिल जाय तो, करते उसे पसंद ।

राज. आर. शिरंगी—जरीपटका, नागपुर

प्र० : आपकी आंख किसी से लड़ गई थी, तो मोतिया बिन्द हो गया, फिर क्या हुआ ?

उ० : मोती डाक्टर ने लिया, हमें दे दिया बिन्दु,
खारी-खारी लगरहा, बिन मोती का सिंधु ।

दिनेशसिंह क्षत्री—चांपा (बिलासपुर)

प्र० : रामायण टाइप की कुछ चौपाई दीवाना में भेजना चाहता हूं, कैसे शुरू करूं ?

उ० : राम-लखन संग सिया सुहाई,
चले अयोध्या, टिकट कटाई ।
सीट न पाई भटक रहे हैं,
वेटिंग लिस्ट में लटक रहे हैं ।

धर्मचन्द सुखदेव प्रजापति—जबलपुर

प्र० : काका जी, आप कारतूस चलाते हैं तो काकी जी ?

उ० : यह पोशीदा बात है, सिर्फ तुम्हें बतलाएं,
काकी का बेलन चले, कारतूस पिट जाएं ।

गिरधर लाल रंगा—बीकानेर (राज०)

प्र० : लड़कियां अपनी उम्र क्यों छिपाती हैं ?

उ० : थोड़ी उमर बताएं तो नाबालिग कहलायं,
अधिक बता दें आयु तो, प्रेमी मुंह बिचकायं ।

सत्येन्द्र कुमार बंसल—सहारनपुर

प्र० : बच्चों की शादी के समय मम्मी-पापा की मनस्थिति कैसी रहती है ?

उ० : लेने को तैयार हैं, चाहें जितना भेज,
देना पड़े दहेज तो, करते हैं परहेज ।

नबी अख्तर—बम्बई-8

प्र० : बम्बई टी. वी. पर आपसे कब मुलाकात होगी ?

उ० : पतिव्रता श्रीमती, हम पत्नीव्रता कहायं,
बीवी की आज्ञा मिले तब टी. वी. पर जायं ।



महेश प्रसाद गुप्त—घाटमपुर (कानपुर)

प्र० : जीते जी इन्सान कब मर जाता है ?

उ० : जब चुनाव में हारकर, प्रत्याशी घर जाय,
घरवाली के सामने, जीतेजी मर जाय ।

अशोक कुमार धवन—मेरठ

प्र० : एक प्रेमिका के बहुत से प्रेमी कब बन जाते हैं ?

उ० : हां-हां-हां सबसे कहे, झुका झुकाकर शीश,
इक लैला के दीवाने, मजनू हों पच्चीस ।

दिनेश भाई 'राजा'—इन्दौर

प्र० : कांग्रेस आई का शासन कब तक रहेगा ?

उ० : रहे विरोधी दलों में, जब तक लूटम-फूट
तब तक मइया इन्दिरा, नहीं हो सके हूट ।

किशोरी सिंह घायल—पीलीभीत

प्र० : आप अगले जन्म में क्या बनना चाहते हैं ?

उ० : मैं अगले जन्म में लिपिस्टिक बनूंगा,
हसीनों के होठों पे, नाचा करूंगा ।

काका के कारतूस
दीवाना, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मोटू पतलू
भूलन देवी

कहानी एवं चित्रांकन : रघुबीर सिंह




देखना क्या है, वो तो आ ही गए हैं। ये तो आप की चण्डाल चौकड़ी नजर आती है।
भाभी जी पाँव पड़ते हैं।
अरे कमबख्तो मैं कोई बुड्ढा हो गया हूँ जो तुम उसके पाँव पड़ रहे हो। मैं तो उम्र में तुम सब से छोटा हूँ। अभी कल का छोकरा हूँ। तुम सब इस के जेठ हो।
मोटू भईया हमें माफ कर दो। हम भाभी के पाँव नहीं गले पड़ जाते हैं।
भाभी जी ये लीजिए शादी का तोहफा "फूल"।
क्या "गोभी का फूल"!
अरे कगांलो तोहफा गोभी का फूल ही मिला था।
भाभी इसके दो फायदे होते हैं एक तो ये उपहार के काम आता है दूसरा आप इसकी सब्ज़ी बना कर हमें खिलायें।
तभी पीछे से आवाज आती है।
अरे मुफ्तखोरो मेरी गोभी के पैसे तो दे दो।
चुप कर, गधे की तरह क्यों ढेंचू-ढेंचू कर रहा है। जानता नहीं तू हमारी इनसल्ट कर रहा है।
बकने दो जी इस पर कल ढाई लाख का इज्ज़त-हक का दावा करेगें।
भईया पैसे तो दे दो दावा कल कर लेना।



भाभी, ये आदमी हमें गुस्सा दिला रहा है तुम इसके 75 पैसे माथे मारो और इसे चलता करो ।
अबे खरबूजो तोहफा देने आए थे या बेचने, ये लो 100 का नोट गोभी वाले को दे दो। 75 पैसे देकर ९९ रु० 25 पैसे उसे टिप दे दो ।
भाभी तुम खड़ी-खड़ी क्या कर रही हो हमारी चाय का इतंजाम करो ।
भाभी ये तो पूछ लो हम चाय के साथ क्या लेंगे ?
जानती हूँ संखिया (ज़हर) लोगे।
वो तो जब हम चार बार आयेंगे तुम खुद ही ले लोगी। अभी तो हम पहली बार आये हैं ।
अबे तुम्हें शर्म नहीं आती। भाभी को चाय के लिए कह रहे हो। हमारे यहाँ चाय बनाने वाला नौकर, दाल बनाने वाला, झाड़ू लगाने वाला और दरवाजा खोलने वाला। हर काम के लिए अलग-अलग नौकर है ।
तुम्हारी भाभी काम नहीं करती।
भईया हमें तो चाय पीनी है चाहे तू बना या तेरा नौकर। हमें तो बस चाय चाहिए।
मोटू यार, अब तू जल्दी-जल्दी एक-आध बच्चे का बाप बन जा ताकि तेरी गृहस्थी बस जाये।


तुम्हारे मुहँ में अँगारे पड़े। तुम्हारे सर में खाक, तुम्हारे खानदान पर खाक। तुम्हारे जिस्म में वो कीड़े पड़ें जो अभी धरती पर पैदा नहीं हुये। तुम्हें कस्तूरषा नगर के कुत्ते नोच-नोच कर खायें।
भगवान क्या हो गया। कुछ मुझे भी तो बताओ इन्होंने क्या कहा जो इतनी लाल-पीली हो रही हो।
भगवान करे जहाँ छः गये वहाँ सातवाँ भी जाये।
भाभी ये सातवें का क्या चक्कर है?
मुझ बेसहारी सात शोहरों वाली अबला का मजाक उड़ाते हो।
भाभी रो मत, नहीं तो हमें भी रोना आ जायेगा। बात बताओ क्या है?
ये मेरे सिर के ताज मोटू महाराज अठारह बच्चों के बाप हैं। तुम कहते हो एक-आध बच्चों के बाप बन जाओ। इसका मतलब तुम मेरे सत्रह बच्चों का बोलोराम कर रहे हो।
भाभी हमें माफ कर दो हमने अपने दोस्त का दहेज देखे बिना बात कर दी।
भगवान करे हमारा दोस्त साल में ही चौबीस बच्चों का बाप बन जाये।
हाय मैं मर गई! हाय मैं लुट गई! बर्बाद हो गई! क्या इस कलमुँहे की पाँच बीवियाँ और भी हैं, जैसे मेरे छः पति थे। तभी तो एक साल में छः बच्चे हो सकते हैं।
भाभी हम हिन्दुस्तान के मशहूर डाक्टर हैं। हमसे मेडिकल की रिपोर्ट लो। एक साथ आठ-आठ बच्चे पैदा हुये हैं भगवान करे तुम्हारी गोद हरी हो।
ओ थेंक्स, माई देवरजी।



तभी टेलीफ़ोन की घंटी बजती है।
टेलीफोन उठाने वाला नौकर हाजिर हो।
येलीजिये हुजूर।
कौन बक रहा है ?
हुजूर सीक्रेट रिपोर्टर है। आप कौन बोल रहे हैं? अपना परिचय दीजिये।
मैं भूलन देवी का सातवां खसम बोल रहा हूँ।
शेख अबदुल रहमान अपने चमचों के साथ सोने के बिस्कुट ले कर अड्डा नम्बर पाँच पर पहुँच गये हैं।
हूँ। तो इस भूलन देवी के सारे ठाठ-बाठ इसी स्मगलिंग से हैं।
तभी भूलन देवी हाथ में रिवाल्वर लेकर आती है।
अब मुझे क्या करना होगा ?
इस रिवाल्वर से शेख का बोलो राम कर दो और वो सोने के बिस्कुटों का बैग लेकर मेरी सेवा में हाजिर हो जाओ।



भगवान मेरी गोली चलने से पहले अगर शेख की गोली चल गई तो-------?
तो क्या, शेख का नहीं तुम्हारा बोलो राम हो जाएगा।
तो क्या होगा..? भाभी आठवाँ और करलेगी।
ये काम अच्छा है। तनख्वाह भी नहीं देनी पड़ती और काम भी हो जाता है।
डरो नहीं, मर्दों की तरह काम करो। तुम मर गये तो मैं आठवीं शादी डा० झटके से करलूँगी।
और वो चारों रोने लगते हैं।
बेचारा अच्छा था।
अब हम चार रह जायेंगे।
चलो आखिरी बार उसके दर्शन तो कर लें।
मेरे बाद बेटा तीन रह जाओगे।
अरे मोटू मौत के मुँह में जा रहा है हमारे गले तो मिल ले।
तभी पतलू उसके कान में कहता है।
अरे ये बारी-बारी हम सब का सफाया कर देगी। हम शेख का सफाया करके सोने के बिस्कुट लेकर उड़ जायेंगे।
ये क्या खुसर-फुसर कर रहे हो? देखने में तो शेर के बच्चे नजर आते हो। सीने बावन फुट चौड़े, मूँछ डेढ़ फुट लम्बी चेहरे पर जलाल अकबर बादशाह जैसा। और एक शेख को मारने के लिये सोच रहे हो। जल्दी जाओ।
भाभी, यहीं मात खा गईं तुम। हम शेर के बच्चे नहीं छछूंदर के बच्चे हैं।
जल्दी जाओ वर्ना मैं सब को गोली मारकर ढेर कर दूँगी। ये मेरा आर्डर है।
दूसरे दिन पेपर में आता है।
TEJ तेज
दुनिया के मशहूर स्मगलर शेख अब्दुल रहमान की हत्या। कातिल लापता। और कातिल को पकड़ने वाले को एक लाख रु० इनाम।



दूसरी ओर –
मोटू, पतलू, घसीटा, चेला तथा डाक्टर झटका अड्डा नम्बर पाँच पर पहुँचते हैं। लेकिन उनके पहुँचने से पहले ही शेख का मर्डर हुआ होता है।
भागो, मारेगये!
भागो!
भागते-भागते वो सीधे थाने पहुँचते हैं और इंस्पेक्टर को कहते हैं।
हजूर, सोने के बिस्कुटों का बैग भी गायब था जो शेख से छीन कर हमने भागना था।
जब हम अड्डा नं० पाँच पर पहुँचे तो शेख का कत्ल हो चुका था।
इंस्पेक्टर साहब ये लीजिए रिवाल्वर।
यह मुझे भूलन देवी ने शेख को मार ने के लिये दिया था।
तो फिर क्या हुआ?
हूँ.....! तो ये बात है कि तुम बैग छीन-कर उसमें से बिस्कुट गायब करके मशहूर सोशल वर्कर भूलन देवी, गरीबों की हमदर्द पर इल्जाम लगाने आये हो।
नहीं हजूर, हम गंगा मईया की कसम खाकर कहते हैं। हम कत्ल के मामले में बहुत सीरियस हैं।
हवलदार, इनको नंगा करके बर्फ की सिल्लियों पर बिठा दो और इनको तब तक जूते मारते रहो जब तक ये अपने जुर्म का इकबाल न कर लें।
हजूर कितने जूते मार लोगे। पंद्रह हजार जूते खाने के बाद तो हमें पता चलता है कि हमें जूते पड़ने शुरू हुये हैं।
क्या मतलब?
मतलब-वतलब कुछ नहीं। जूते तो हमारी राशि में लिखे हुये हैं चाहे काम हम सही करें या गलत।


इंस्पेक्टर साहब हम शक्ल से कातिल नजर आते हैं।
नहीं, शक्ल से तो तुम भोले शंकर के भक्त नजर आते हो। वाह! क्या बात है जब तुम्हें उल्टा लटकायेंगे तो अपने-आप सच बकोगे।
अरे उल्टा लटकाते लटकाते थक जाओगे। तीन-तीन दिन तो हम खुशी से लटकते हैं।
जूतों का तुम पर असर नहीं। उल्टा लटकने की तुम्हें आदत है। इसका मतलब तुम पक्के मुल्जिम हो।
तभी पुलिस स्टेशन में कमीशनर साहब आते हैं। और उन पाँचों को पहचान लेते हैं।
अरे तुम पाँचों पुलिस स्टेशन में क्या कर रहे हो?
कमीशनर साहब हम इंस्पेक्टर साहब को कह रहे हैं कि भूलन देवी ने शेख का खून करके माल उड़ा लिया है। मगर ये मानते ही नहीं।
इंस्पेक्टर ये लोग ठीक कह रहे हैं। भूलन देवी के मकान को चारों तरफ से घेर-कर तलाशी ली जाये।
इंस्पेक्टर अपनी फोर्स के साथ भूलन देवी के मकान को घेरकर तलाशी लेता है। तो बहुत-सा स्मगलिंग का माल बरामद होता है और भूलन देवी को गिर-फ्तार कर लिया जाता है।
आप लोग ठीक कह रहे थे। वो देशभक्त नहीं बल्कि स्मगलरों की सरदार थी। उसको पकड़वाने के लिये पुलिस की ओर से आप लोगों को सवा लाख रुपये का इनाम दिया जायेगा।
मेरे सातवें खसम ने तो मेरा जीते-जी बोलो राम कर दिया।
समाप्त

अनाड़ी भूत

किलाचन्द ने जब अन्तिम कहानी सुनाई थी उसका दृश्य ज्यों का त्यों मेरी आंखों के सामने आ जाता है। वह वहां आग के सामने सैटी पर बैठा-बैठा ही कहानी सुना रहा था, उसके पास ही सतीश कुमार बैठा हुआ अपना पाइप पी रहा था जिस पर उसका नाम लिखा था।महेन्द्र भी था उस दिन और वह अद्भुत कलाकार, विश भी जो वास्तव में एक शर्मीला व्यक्ति है,वहीं था। हम सब के सब ही किलाचन्द के अलावा शनिवार की सुबह ही मोडर्न क्लब आए थे केवल किलाचन्द ही रात को क्लब में सोया था और इसी से उसे अपनी कहानी की भूमिका भी मिल गई थी।

हम सब गोल्फ खेलते रहे जब तक कि रोशनी ने इस की इजाजत दी, फिर सबने खाना खाया और हम थके से आराम के ऐसे आलम में थे कि हम किसी की भी कोई भी कहानी सुनने को तैयार थे। जब किलाचन्द ने कहानी आरम्भ की तो जाहिर है हम सबने समझा वह झूठ बोल रहा है। इसके विषय में तो शीघ्र ही पाठक मेरे साथ-साथ निर्णय कर लेंगे। उसने कहना शुरू किया—यह सच्ची बात है, जैसे कि कोई बिलकुल सच्चा वाकया बयान कर रहा हो, परन्तु हमने इसे केवल उसकी हवा बन्दी समझा।

'सुनो!' वह बोला, 'काफी देर तक कमरे में जलती आग से उठने वाले शोलों को बड़े ध्यान से देखते रहने के बाद तुम जानते हो, मैं रात को यहां बिलकुल अकेला था?'

'नौकर चाकरों के इलावा', विश बोला!

'जो सब क्लब के दूसरे भाग में सोते हैं' 'किलाचन्द ने कहा, 'हां, अच्छा—'उसने अपने सिगार का एक लम्बा कश लगाया मानो वह अपना आत्मविश्वास एकत्रित कर रहा हो फिर वह बहुत ही धीरे से बोला, 'मैंने एक भूत पकड़ा था।'

''क्या! तुमने भूत पकड़ा था?' सतीशकुमार बोला 'कहां है वह?'

और महेन्द्र जो किलाचन्द का भारी प्रशंसक है और चार हफ्ते अमरीका में भी लगा आया, जोर से बोला—

'क्या, तुमने भूत पकड़ा था, किलाचन्द? ओह मुझे बड़ी खुशी हुई जान कर, हमें बताओ, अभी सब कुछ।'

किलाचन्द ने कहा एक मिनट में सब बतायेगा और उससे दरवाजा बन्द कर लेने को कहा।

उसने मेरी ओर क्षमा याचक की सी नजर डाली, यहां कोई छुप कर बेशक नहीं सुन रहा, पर हम नहीं चाहते भूत के यहां होने की अफवाहों के कारण क्लब की बढ़िया सर्विस खराब हो जाये, यहां बहुत अधिक पेड़ और लकड़ी की अलमारियां हैं, जिससे गलत फहमी चल सकती है। और यह भूत कोई सामान्य भूत नहीं था मुझे तो विश्वास है वह दोबारा यहां कभी नहीं आएगा।'

'तुम्हारा मतलब है तुमने उसे छोड़ दिया, पकड़कर रखा नहीं? सतीश कुमार बोला।

'मेरा मन नहीं माना',किलाचन्द ने कहा।

और सतीश कुमार ने कहा उसे आश्चर्य है। हम सब एक साथ हंसे, किलाचन्द दुखी सा दिखाई दिया।

'मुझे मालूम है', वह चेहरे पर मुस्कान लिए बोला,परन्तु सच यह है, कि वह वास्तव में भूत था, और मुझे इस बात का इतना ही विश्वास है जितना कि मुझे इस समय तुम लोगों से बात करने का है। मैं मजाक नहीं कर रहा, मैं जो कह रहा हूं गम्भीर रूप से कह रहा हूं।'

सतीश कुमार ने अपने पाइप का एक लम्बा कश खींचा और एक लाल सी आंख किलाचन्द की ओर कर धुएं की एक पतली धार छोड़ी जिसने बहुत से शब्द कहे जो शायद मुंह से कहे भी न जाते।

किलाचन्द ने टिप्पणी की परवाह न की, 'मेरे जीवन में कभी भी ऐसी अजीब घटना नहीं घटी। तुम्हें मालूम है पहले कभी मुझे किसी भूत-वूत का विश्वास नहीं था, और फिर अचानक मैंने एक भूत को कोने में पकड़ लिया, जिसका सब कुछ अचानक मेरे हाथ में आ गया।' उसने और भी अधिक संलग्न हो दूसरे सिगार को जलाना आरम्भ किया और खामोशी का अजीब प्रभाव हुआ।

'तुमने उससे बात की थी?' विश ने पूछा।

'शायद करीब एक घंटे तक।'

'बातून था।' मैं अपने मित्रों की टोली में सम्मिलित होते हुए बोला।

'बेचारा भूत मुसीबत में पड़ गया था', किलाचन्द बोला, और अपने सिगार के सिरे पर झुका रहा।

'सिसक रहा था?' किसी ने पूछा।

किलाचन्द ने याद करने की एक वास्तविक सी गहरी सांस ली' ओह भगवान्? 'हां, बेचारा! हां'।'

'तुम्हारी उससे कहां भिड़न्त हुई?' महेन्द्र ने अपने खास लहजे में पूछा।

'मैंने सोचा भी नहीं था' किलाचन्द ने महेन्द्र की बात को नजरन्दाज करते हुए कहा 'कि भूत भी बहुत बेचारा सा हो सकता है जैसा कि वह था' और फिर किलाचन्द चुप हो गया। अपनी जेबों में माचिस ढूंढ़ने में लगा रहा, हम सब अब तक उत्सुक हो उठे थे।

'मैंने भी उसकी मासूमियत का फायदा उठाया, आखिर उसने कहना शुरू किया।

हमें कोई जल्दी न थी 'एक आदमी का व्यक्तित्व, वैसा ही रहता है जैसा होता है, चाहे उसका शरीर न रहे। यह एक बात है जो हम लोग अक्सर भूल जाते हैं। जीवन में आत्मविश्वास और बल रखने वाले लोग, भूत बनकर भी आत्मविश्वासी और बलवान् रहते हैं। अधिकतर बार-बार आने जाने वाले और तंग करने वाले भूत मेरे ख्याल से उन्मादी भूत होते होंगे, जो जीवन में बेहद जिद्दी व्यक्ति रहे होंगे, परन्तु वह बेचारा ऐसा न था' अचानक किलाचन्द ने कमरे में चारों ओर एक अजीब सी निगाह डाली' 'मैं सच कहता हूं कि देखते ही वह भूत मुझे बेचारा कमजोर सा ही प्रतीत हुआ था।'

और वह फिर अपने सिगार का

कश लेने को रुका ।

'मेरी उससे मुठभेड़ उस लम्बे गलियारे में हुई, उसकी पीठ मेरी तरफ थी इस कारण मेरी निगाह ही पहले उस पर पड़ी।देखते ही मैं भांप गया वह भूत था, वह पारदर्शी और सफेद सा था, उसके सीने पार दूर से खिड़की चमकती दिखाई दे रही थी। और न केवल उसका डील डौल बल्कि उसका रवैया भी, मुझे कमजोर महसूस हुआ। ऐसा लगता था कि उसे बिलकुल भी मालूम नहीं कि उसे क्या करना चाहिए। उसका एक हाथ तो पैनल पर था और दूसरा वह ऐसे अपने मुँह के करीब ले गया।

'कैसा डील डौल था?' सतीश कुमार ने पूछा।

'पतला दुबला, तुम जानो वैसी तरह का जिनकी कमर पर दो धारियां सी महसूस होती हैं, छोटा सा अजीब सा सिर उस पर झाड़ जैसे बाल और कुछ भद्दे से कान, कंधे भी बुरे, कूल्हों से भी छोटे, मुड़ा हुआ कालर, रेडीमेट जैकेट ढीली ढाली पतलून जो पांयचों पर घिसी हुई थी। ऐसी हालत में वह मुझे मिला था। मैं बहुत ही चुपचाप सीढ़ियों से आया था मैंने बत्ती नहीं ले रखी थी क्योंकि सीढ़ियों के बीच में मेज पर मोमबत्ती लगी है और वहां वह लेम्प लगा हुआ है—और मैं अपने बाथरूम सलीपट पहने जैसे ही ऊपर पहुंचा वह मुझे दिखाई दिया। मैं उसे देखते ही एक दम ठिठक गया—फिर मैंने उसे ध्यान से देखा, मैं डरा बिलकुल नहीं था। मेरे ख्याल से अधिकतर ऐसी स्थिति में व्यक्ति उतना डरता नहीं है जितना कि उत्सुक हो जाता है। मैं हैरान भी था साथ ही मुझे दिलचस्पी भी हो आई थी। मैंने सोचा 'ओह भगवान् यह देखो सामने एक भूत खड़ा है और एक मैं हूं जिसने पिछले पच्चीस वर्ष में भूत वूत पर विश्वास नहीं किया।'

'हूं', विश ने कहा।

'मेरे ख्याल से मुझे लैंडिंग पर पहुंचे एक क्षण भी नहीं हुआ था, कि उसे मेरा वहां होने का पता चल गया। वह एक दम घूम गया और मेरे सामने था एक अप्रौढ़ नवयुवक जिसकी कमजोर सी नाक, छोटी उड़ती सी मूंछ और नाजुक ठोडी थी, एक क्षण हम एक दूसरे को देखते रहे, वह अपने कंधे के ऊपर से मुझे देख रहा था। फिर उसे अपनी भूत प्रवृति याद आती प्रतीत हुई। वह गोल घूम गया और सीधा हो अपना चेहरा उठाया, फिर भूतों के फैशन में अपनी बांहें ऊपर कीं और मेरी ओर बढ़ा। जैसे ही उसने यह किया, उसका छोटा सा जबड़ा लटक गया और उसके मुंह से एक बहुत ही कमजोर हल्की सी 'भागो' का शब्द निकला। नहीं! आवाज बिलकुल डरावनी नहीं थी। मैंने पेट भर खाना खाया था साथ ही शेम्पेन शराब की एक बोतल भी पी रखी थी और अकेले होने की वजह से दो या तीन शायद चार पांच व्हिस्की भी पी रखी थीं। मैं एक पत्थर के समान कठोर स्थिति में था इस लिए मुझे ऐसा लगा मानो कोई चूहा आगे आ गया हो। मैं बोला, 'भागो! फिजूल बात है, तुम तो यहां के नहीं हो, यहाँ क्या कर रहो हो?'

मैंने उसे झिझकते हुए देखा, 'भा-गो' वह बोला।'

'भागो—भाड में जाओ! क्या तुम यहां के मेम्बर हो? मैंने पूछा, और उसे दिखाने के लिए कि मुझे उससे कोई डर नहीं रहा, मैं उसके एक कोने से निकल गया और मोमबत्ती जलाने लगा, मैंने साईड से देखते हुए फिर पूछा 'क्या तुम मेम्बर हो?'

वह मुझ से थोड़ा सा हटकर खड़ा हो गया और उसके ऊपर आकाश सा गिरा लगने लगा, 'नहीं', उसने मेरी निरन्तर घूरती दृष्टि का उत्तर दिया, 'मैं मेम्बर नहीं हूं—मैं भूत हूं।'

'ठीक है पर उससे तुम्हें माडर्न क्लब में घूमने का अधिकार तो नहीं मिल जाता। क्या तुम किसी खास व्यक्ति से मिलना चाहते हो या कुछ और चाहिए? यह सब करते हुए मैंने अपने को अच्छी तरह सम्भाल रखा था क्योंकि मुझे डर था कि कहीं शराब के नशे की लापरवाही को वह पहचान न ले।

'तुम यहां क्या कर रहे हो?' मैंने पूछा।

उसने अपने हाथ नीचे कर लिए थे और डराने का प्रयास बन्द कर वह मेरे सामने खड़ा था। एक बहुत ही शर्मीले अजीब से कमजोर निरुद्देश बेवकूफ नौजवान का भूत। 'मैं यहां घूम रहा



हूं, वह बोला।

'यहां घूमने का तुम्हारा कोई मतलब नहीं है', मैंने धीमी सी आवाज में कहा।

'मैं भूत हूं' वह बोला, मानो आत्म-रक्षा हित बोला हो।

'होगे तुम भूत, फिर भी तुम्हें ऐसे यहां थोड़े ही घूमना चाहिए। यह एक आदरणीय प्राईवेट क्लब है। लोग यहां अपनी आया और बच्चों के साथ अक्सर आया जाया करते हैं, तुम्हारे इस तरह यहां घूमने से कभी भी किसी बच्चे की नजर तुम पर पड़ सकती है जिससे उस बेचारे की तो डर से जान ही निकल जाएगी, मेरे ख्याल से तुमने इस विषय में सोचा ही नहीं होगा ?'

'नहीं श्रीमान्, इसका ख्याल नहीं आया', वह बोला।

'तुम्हें सोचना चाहिए था, तुम्हारा इस जगह पर कोई हक तो नहीं है न ?' तुम्हारा यहां खून तो नहीं हुआ था या कोई और ऐसी बात तो नहीं है न ?'

'नहीं जनाब' पर मैंने सोचा, यह इमारत पुरानी है और इसमें लकड़ी की पैनल लगी है—

'यह तो कोई वजह न हुई', मैंने उस पर एक सख्त निगाह डाली।

'तुम्हारा यहां आना बिलकुल तुम्हारी गल्ती है,' मैंने उससे एक बुजुर्ग दोस्त के समान कहा। मैं अपनी माचिस देखने को झुका फिर मैंने ऊपर मुंह किया और उससे साफ-साफ बोला, 'यदि मैं तुम्हारी जगह होता तो मुर्गे बोलने की प्रतीक्षा करे बिना तुरन्त गायब हो जाता।'

'वह कुछ शर्मिन्दा सा दिखाई दिया। 'बात असल में यह है जनाब—' वह बोला।

'मैं गायब हो जाता', मैंने अपनी बात पर जोर दिया।

'तुम गायब नहीं हो सकते ?'

'नहीं सर, मैं कुछ भूल गया हूं, मैं कल आधी रात से ही यहां भटक रहा हूं, खाली कमरों की अलमारियों वगैराह में छिप कर समय काटा है, मैं तो परेशान हो गया हूं, मैं पहले कभी भूतों के समान रात को घूमने नहीं आया और यह सब मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा।

'तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा ?'

'हाँ' सर ! मैंने कई बार याद करने याद का प्रयत्न किया है परन्तु मैं ठीक से नहीं कर पा रहा, कोई छोटी सी बात मैं भूल गया हूं और अब वापिस नहीं जा पा रहा।'

'उसकी इस बात ने तो मुझे चक्कर में डाल दिया। उसने इसके साथ ही मेरी ओर कुछ ऐसे देखा कि हिम्मत और बहादुरी का जो नाटक मैं कर रहा था एक दम से मेरा साथ छोड़ गया।' यह बड़ी अजीब बात है।' और जैसे ही मैंने यह कहा, मुझे नीचे किसी के चलने की आवाज सुनाई दी। मेरे कमरे के अन्दर आ जाओ और मुझे इस विषय में पूरी बात बताओ' और मैंने बिना सोचे ही उसे बांह पकड़ कर भीतर ले जाने की कोशिश की। वैसे मैं इस बात को समझ नहीं पाया था परन्तु मुझे ऐसा लगा मानो सिगरेट के धुएं को पकड़ रहा हूं। मुझे लगा मैं अपने कमरे का नम्बर भूल गया था क्योंकि मुझे याद है मैं कई कमरों में घुसा, भगवान् का शुक्र तो यह है कि मैं अकेला ही था क्लब के इस भाग में। आखिर मुझे अपना कमरा मिल ही गया और मैं आराम कुर्सी पर बैठते हुए बोला 'बैठ जाओ और मुझे इस बारे में सब कुछ बताओ, मुझे लगता है तुमने अपने को बड़ा ही अजीब स्थिति में डाल लिया है, बरखुरदार !'

'अच्छा', वह बोला, बैठा नहीं वो, अगर मुझे एतराज न होता तो वो कमरे के अन्दर बाहर ऊपर नीचे जाता आता रहता और कुछ ही देर बाद हम दोनों लम्बी गम्भीर वार्ता में मुबतिला हो गए और व्हिस्की का मेरा नशा काफूर हो गया जैसे ही मैंने जाना कि मैं अजीब और भारी मुसीबत में घिर चुका हूं, वह था आधा पारदर्शी स्थिति में एक पूर्ण परम्परागत फैन्टम, बिलकुल बिना आवाज सिवाये उसके ऊपर नीचे आने जाने के इस पुराने बैडरूम में कोई आवाज नहीं थी। तांबे के मोमबत्ती के स्टैंडों में लगी मोमबत्ती उसके शरीर के भीतर से साफ दिखाई दे रही थीं। दीवार पर लगे तस्वीरों के फ्रेम और पीतल के प्रकाश रोकने वाले सभी उसके आर-पार दिखाई दे रहे थे फिर भी वह मुझे धरती पर के अपने छोटे बदनसीब जीवन का जो हाल ही में समाप्त हुआ था के विषय में बता रहा था। उसका चेहरा कुछ अधिक सच्चा नहीं दिखता था परन्तु

शेष पृष्ठ ३५ पर



उर्दू हास्य व्यंग

दिमाग चाटने वाले



मूल : इब्राहीम जलीस

मेरे मिलने वाले बेशुमार हैं मगर, उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनके बारे में रह-रहकर मुझे याद आता है कि उनसे मुलाकात न हुई होती तो अच्छा होता। यह सही है कि जब मैं किसी से मिलता हूं तब प्रेम से कह देता हूं। मुझे आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। लेकिन यह वाक्य तो बिल्कुल साधा होता है इसका अर्थ यह तो नहीं कि इसका अनुचित लाभ उठाया जाए और मुझसे बार-बार इसलिए मुलाकात की जाए कि उनसे पहली बार मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई थी।

वैसे मैं सच-सच बताता हूं कि अब तो इन मिलने वालों को देखकर ही मुझे बड़ी परेशानी होती है। अक्सर सोचता हूं कि जरा ढीट बनकर साफ-साफ कह दूं—जनाब ! मैं आपसे हर्गिज नहीं मिलना चाहता। मुझे न आपसे पहली बार मिल कर खुशी हुई है। मुझे आप आइन्दा के लिए माफ कीजिए और खुदा के लिए पीछा छोड़िए।

' लेकिन क्या मैं ऐसा कर पाता हूं ? बिल्कुल नहीं मुझमें इतना साहस नहीं है। वजह है कि पहली मुलाकात में ही बिना सोचे समझे कह देता हूं कि आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। मगर वास्तविकता यह है कि सैयद शाह हुसैन से मिल कर किसी को क्या खुशी हो सकती है ?

मुझे अपने मित्र मुहम्मद रिआज खां पर बड़ा क्रोध आता है, जिन्होंने सैयद शाह हुसैन से मेरा परिचय कराया। यह एक खुली हकीकत है कि जिस दिन हुसैन से किसी की मुलाकात होती है वह दिन उस आदमी के लिए बड़ा मनहूस होता है। मेरी जिंदगी में ऐसे मनहूस दिन बढ़ते जा रहे हैं क्योंकि हुसैन हर रोज मुझसे मिलता है। मैं जितना उससे दूर भागता हूं वह उतनी ही तेजी से मेरे पास दौड़ता है और फिर मैं पूछता हूं—ओह सैयद शाह हुसैन साहब ! कहिए मिजाज तो अच्छे हैं ?

बस फिर कुछ न पूछिए। उसकी जबान चलने लगती है तो घंटों चलती रहती है। उसे इस बात की चिंता नहीं कि आपको बुखार है, आपका सिर दर्द कर रहा है या आप अपनी प्रेमिका की व्याकुलता से इंतजार कर रहे हैं। उसे तो बस इस बात का निश्चय-सा हो जाता है कि वह बड़ा अच्छा बातूनी है और घंटों बोल सकता है। ईरान की बातें, तेहरान की बातें बेकार बातें और अगर आप गौर से देखें तो पता चलेगा कि वह आपसे बातें नहीं कर रहा बल्कि आपका दिमाग चाट रहा है।

हुसैन जब कभी मिलता है पहले यह जरूर कह देता है—कोई खास बात नहीं बस इधर से गुजर रहा था, सोचा तुमसे दो एक मिनट के लिए बातें करता चलूं। फिर पूछता है—अरे भाई कुछ सुना तुमने ? अभी-अभी एक अफसोस नाक बात हुई है। वह मोहनलाल है न, चलती मोटर से गिर पड़ा। बेचारे को बड़ी सख्त चोट आई।

मैं पूछता हूं—कौन मोहनलाल ?

वह आश्चर्य से कहता है—अरे मोहनलाल को नहीं जानते ? ठीक ही तो है तुम मिले ही नहीं तो जानोगे कैसे। वह एक बड़ा प्यारा दोस्त है। डिप्टी दया नारायण का भतीजा है बिल्कुल डिप्टी साहब की तरह खुशमिजाज और जिंदा दिल ! हाय! हाय ! डिप्टी साहब की क्या तारीफ की जाए। अभी पिछली जुलाई में वह स्वर्गवासी हुए हैं। हां उनकी मौत पर खूब याद आया। वह बेचारा कमर दीन भी तो मर गया। उसके छोटे-छोटे बच्चे थे। अरे हां भाई, तुम्हारे छोटे बच्चे का क्या है ? कौन से डाक्टर का इलाज करवा रहे हो ? आजकल तो यहां कोई अच्छा डाक्टर है ही नहीं। सब 'नीम हकीम खतराए जान हैं' अब तो मेरे यार इलाज करने वाले भी डाक्टर हैं। इस पर एक बात याद आई। वह जो डाक्टर फरूक हसन है न, अजी लिटरेचर के प्रोफेसर ! उन्होंने इस्तीफा दे दिया है। बड़ा खुद्दार आदमी था। मैंने अपनी जिंदगी में दो ही खुद्दार आदमी देखें हैं—एक डाक्टर और दूसरा तबला मर्चेंट कासिम। तुमने कासिम की यह बात तो सुनी होगी कि एक बार बड़े रईस ने अपनी कार दुकान के बाहर रोककर कहा था—ऐ मियां तबले वाले इधर आओ इसे ठीक करना है। 'तब मुहम्मद कासिम ने वहीं बैठे-बैठे जवाब दिया—'गरज पड़ी है तो मोटर से उतरकर यहाँ आओ वरना रास्ता नापो।' यह है खुद्दारी, वह काम करना है, किसी रईस का रोब क्यों ?......

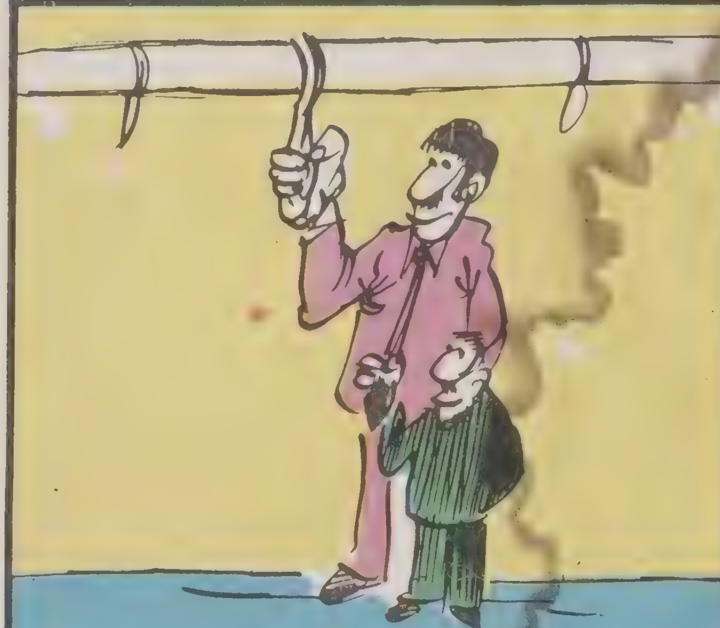
शेष पृष्ठ [illegible] पर

लम्बे नाटे का मेल

लम्बे नाटे के मेल से पैदा होने वाली कुछ स्थितियों पर गौर फरमा कर मनोरंजन करें—



नाटे दोस्त का सिर गंजा हो तो लम्बे वाला दाढ़ी बढ़ा कर अपने दोस्त के सिर की काफी कुछ कमी पूरी कर सकता है।



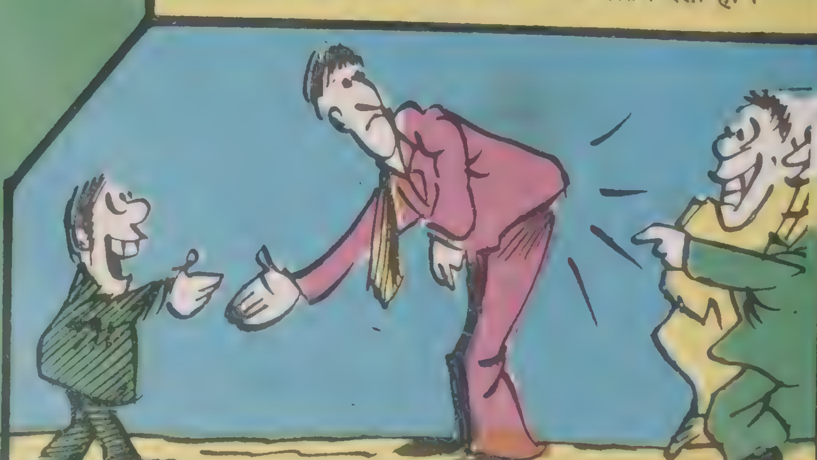
बस में भीड़ हो। कुछ सहारे के लिए पकड़ने को नहीं मिल रहा हो तो नाटा दोस्त लम्बे की टाई पकड़ सफर कर सकता है। लम्बे को तो कुछ न कुछ मिल ही जायेगा।



लम्बा दोस्त तोंदियल हो तो नाटा सर्दियों में तोंद के नीचे खड़ा होकर अपने सिर को गर्मी पहुंचा सकता है। ऐसा लगेगा जैसे सिर पर गर्म पानी की बोतल रखी हो।



लम्बा व नाटा दोस्त दोनों एक ही समय में एक अखबार पढ़ सकते हैं। लम्बे वाला ऊपर के कॉलम पढ़ेगा और नाटे वाला नीचे के कॉलम।



लम्बा व नाटा मित्र मिलें और लम्बे को हाथ मिलाने के लिए झुकना पड़ेगा—इससे कभी-कभी पेंट की सिलाई फट सकती है। और आस-पास के लोगों को ठहाके मारने का सुअवसर प्राप्त हो सकता है।



बीबी पति से लम्बी हो तो पतिदेव फायदे में रहेंगे। बीबी को हमेशा नजरें झुकाकर बात करनी पड़ेगी।
नाटे दोस्त के बाल झड़ रहे हों और चांद ऊपर से गंजी होनी शुरू हो गई हो तो लम्बे वाला आसानी से देख सकता है। अपने मित्र को समय रहते चेतावनी दे सकता है।
लम्बा मित्र नाटे के सिर को कुछ रखने के लिए स्टैंड की तरह प्रयोग में ला सकता है। चित्र में देखिए सिर पर ऐशट्रे रख कर लम्बा कितने मजे से सिगरेट के कश मार रहा है।
लम्बे प्रेमी को नाटी प्रेमिका के सिर पर फूल लगाने में सुभीता रहेगा।
नाटा मित्र वक्त पड़ने पर लम्बे मित्र के पीछे छिप सकता है। चित्र में देखें, नाटे मित्र को जो आदमी जा रहा है उसके पैसे देने थे। लम्बे की टांगों के पीछे छिप कर जान बचा ली।
नाटी पत्नी दरवाजे में चिटकनी नहीं लगा सकती अतः नाटी के पति को घर का दरवाजा हमेशा खुला मिलेगा।
नाटे पुलिस वाले को लम्बे चोर की दाढ़ी में तिनका
में ज्यादा दिक्कत पेश नहीं आएगी।

पृष्ठ १९ से आगे

अरे भाई जलीस उठ खड़े हुए ? अमां यार, बैठो, कहां जा रहे हो।'

मगर मैंने जवाब दिया—'मुझे साढ़े ग्यारह बजे एक साहब से मिलना है, सिर्फ पन्द्रह मिनट बाकी रह गए है । अच्छा, फिर मुलाकात होगी, खुदा हाफिज है।

और मैं सिर पर पांव रखकर भागा। यह सत्य है कि मुझे किसी से मिलना नहीं, मगर आप ही बताइए कि मुझे डाक्टर, तबलची या मोहनलाल से क्या दिलचस्पी हो सकती है।

सयैद शाह हुसैन साहब की तरह एक और साहब है—मियां फजलुद्दीन । यह साहब जिला तहसील में पेशकार हैं। जब भी शहर आकर मुझसे मिलते हैं, तब पहला सवाल करते है—मियां कब आए ?

'जी, मैं यहीं रहता हूं । पिछले पांच साल से किसी छोटे से सफर पर भी नहीं गया। वह फरमाते हैं—ओह! वह आपके भाई हैं, जो बम्बई में हैं।

'जी, मेरे तो कोई भाई बंबई में नहीं हैं।

वह जिद करते हैं और अपनी वात पर अड़ जाते हैं। विवश होकर मुझे उनकी बात का समर्थन करना पड़ता है।

वह फिर पूछते हैं……'हूं तो आप क्या कर रहे हैं ?

'एक अखबार का एडीटर (संपादक) हूं।',

'अखबार के एडीटर हो खूब। अच्छा आजकल अखबारों में क्या छप रहा है।

मन करता है कि ऐसे सवालों पर……मगर फिर सोचकर यह कि वह बुजुर्गों के मिलने-जुलने वाले हैं मन मार कर रह जाता हूं।

परसों मैंने उन्हें चकमा दिया। वह शहर आए थे। अचानक मुझे सड़क पर नजर आ गए। मैं साइकिल पर जा रहा था। मुझे देखकर उन्होंने पुकारा—मियां, अरे ठहरो ! ठहरो, बात तो सुनो।

मगर मैंने बिल्कुल अनजान बनकर साईकल तेज कर दी और मैं भाग ला।

एक साहब मेरे पड़ोसी हैं। उन्हें बुढ़ापे की वजह से जल्दी नींद नहीं आती हर रोज रात को खाना खाने के बाद मेरे पास आते हैं। और पहला सवाल यह करते हैं—सुनाइए आज अखबार में क्या लिखा है ?

मैं चुपचाप उनकी तरफ अखबार बढ़ा देता हूं, । मगर वह अखबार वापस करते हुए कहते हैं—अखबार तो मैं सुबह ही पढ़ चुका हूं, इसमें क्या रखा है ? तुम कुछ बताओ रूस हिन्दुस्तान पर कब हमला बोलने वाला है ?

मन करता है कि साफ-साफ कह दूं कि—भला रूस को क्या पागल कुत्ते ने काटा है कि वह हिन्दुस्तान पर हमला करेगा, मगर जी कड़ा करके उनकी मूर्खता पर मुस्करा देता हूं।

एक और सहाब हैं। लोग इन्हें आर्टटिस्ट कहते हैं। वह कला में निपुण, गजल नज्म, कहानी, चित्रकारी का उन्हें शौक है। और आजकल वे नाच सीख रहे हैं।

मैं जब कभी उनको नजर आता हूं यह मुझे जबरदस्ती पकड़कर मोटर में बैठा सीधा घर ले जाते हैं। हुक्म होता है कि पहले चाय, सिगरेट पीकर ताजा दम हो जाऊं। पहली ही सिगरेट पीता हूं कि अपनी ताजा गजल या नज्म शुरू कर देते हैं। अब मैं हूं कि बात-बे बात वाह-वाह' करने लगता हूं। इसके बाद वह अपनी जासूसी रूमानी और सामाजिक कहानियां सुनाने लगते हैं।

दो बज जाते हैं। अन्दर से खाना आता है। उसके बाद वह अपनी डायरी के पृष्ठ बड़े लोगों के ओटोग्राफ अपनेलिखे भाषण सुनाते दिखाते रहते है। शाम के पांच बज जाते हैं। चाय आती है उसके साथ उनके गाने का प्रोग्राम और शेरबाजी शुरू हो जाती है। आठ बजे तक यह क्रम चलता है। रात का खाना खाने के बाद वह चित्रकारी के नमूने दिखाना शुरू करते हैं—

यह ताजमहल है, असली ताजमहल से खूबसूरत।

यह एक लड़की की तस्वीर है प्यार में विफलता इसके चेहरे से झलकती है।

यह मेरी सबसे अच्छी तस्वीर है, इस साल बंबई की आर्ट 'एक्जीवीशन' में भेजी जाने वाली है।

इसी तरह रात के दो बज जाते हैं। अब उनके संगीत का प्रोग्राम शुरू होता है। तीन घंटे तक उनका यह काम चलता है। सुबह के पांच बज जाते हैं। मुर्गा बोलने की आवाज कानों में आती है। मेरी आंखों में नींद है सिर भारी हो चुका है। वह चौंक कर फरमाते हैं---अरे शाम से सुबह हो गई। तो तुम्हें सुबह और शाम की खबर ही नहीं । आओ, सुबह को देवी के दर्शन करें।'

'और मैं माफी मांग कर बड़ी मुश्किल से पीछा छुड़ाकर घर की तरफ भागता हूं।'

'जी हां, यह मेरे बचपन के साथी हैं। मैं बी. ए. पास कर चुका हूं, मगर यह दर्जा चार तक पढ़कर, बाबा के साथ मिलकर कपड़े का काम करने लगे हैं। वह मुझे काफी पढ़ा-लिखा समझते हैं, इसलिए कारोबारी पत्रों को लिखाने और पढाने का काम मुझसे लेते हैं। यही नहीं बल्कि लड़की की शादी से लेकर इलाज तक की राय मुझसे लेते हैं। भाई तुम रियासत और साहित्य की बातें जानते हो, कुछ बताओ तो सही की देशी कपड़ों के साथ विलायती कपड़ों का व्यापार भी शुरू कर दूं तो कैसा रहे ? और हां, छोटे लड़के को गिरजा स्कूल में भेजूं या सरकारी स्कूल में दाखिल कराऊं ? फोड़े का आपरेशन कराऊं या दवाइयां ही खाता रहूं ? हुक्का छोड़कर सिगरेट शुरू कर दूं या सिर्फ पान खाऊं ? रुपये डाक-खाने में जमा करूं या बैंक में ?

रामकिशन जी हर रोल में मेरी पवित्रता की परीक्षा लेने आ जाते हैं अब मैं उन्हें किस तरह समझाऊं कि मेरी खोपड़ी में जितना कुछ था वह हुसैन ने, पेशकार साहब ने, पड़ोसी बुजुर्ग ने आर्टिस्ट और आपने चाट लिया है, अब मैं आपको भला क्या राय दे सकता हूं लेकिन मुझमें इतनी भी तो हिम्मत नहीं कि इन दिमाग चाटने वालों से कह सकं 'मुझे माफ कीजिए, मैं बाज आया इस तकल्लुफ से। खुदा हाफिज !'

अनु : तरनजीत

दीवाना कार्ड मोड़कर देखिये

दोनों तीरों को आपस में मिलाइये

पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया ने फिर कहा है कि वह भारत के साथ मित्रता के सम्बन्ध चाहते हैं। उनका इरादा भारत से युद्ध करने का नहीं है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के लिए भारत से जूझना आत्महत्या होगी। वह ऐसी मूर्खता नहीं करेंगे—

उन्होंने तुलना की ......
भारत की सेना पाकिस्तान
की सेना से तीन गुना बड़ी है
भारत की नौ सेना पाक नौ सेना
से सात गुना बड़ी है।
भारत की वायु सेना पाक
वायु सेना से पांच गुना बड़ी है
भारत की जनसंख्या पाकिस्तान से छः
गुना है। भारत का राष्ट्रीय उत्पादन भी
छः गुना ज्यादा है।

उन्होंने दावा किया...
पाकिस्तान भारत से मित्रता करने का
हर प्रयत्न कर रहा है—व्यापार समझौता
कर रहा है। युद्ध नहीं संधि की पेशकश कर रहा है
जनरल जिया के भारत से मित्रता करने की
सच्ची इच्छा का असली सबूत जानना
चाहते हैं तो पृष्ठ मोड़कर देखें।



क्यों और कैसे

प्र० : क्या पौधे बोगस अन्डे पैदा करते हैं ?

उ० : पैसीफोरा सायनिया मध्य अमरीका की एक ऐसी अंगूर की बेल है जो झूठे अण्डे पैदा करती है ताकि पौधे को खाने वाली तितलियों को दूर रखा जा सके। 'हेलीकोनियस' तितली जब अंडे देने के लिए स्थान की खोज में निकलती है तो बेल पर दूसरी तितली जैसे अंडे देख पौधे के करीब से गुजर जाती है।

ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय की कैथी विलियमस का कहना है कि पौधे को अपनी सुरक्षा के विषय में पूर्ण गम्भीर होना पड़ता है। परन्तु कैटर-पिलर पौधे को इतनी हानि पहुंचाते हैं कि सुरक्षा के लिए परेशानी उठाना लाभदायक ही रहता है। कैथी विलियम ही की खोज से नकली अण्डों के रहस्य का पता चला था।

यह सच है कि हैलिकोनियस तितली के अण्डे से निकले बच्चे के पौधे को पूरी तरह नष्ट कर देने की आशंका रहती है क्योंकि अंडे से निकला एक-एक केटर-पिलर अपने दो सप्ताह के 'लारवा' स्थित में नित्य पौधे की एक पत्ती को चबा जाता है।

ट्रोपिक्स में विकास एक जीवन मरण का बहुत ही तेज खेल है। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि 'पैसीफोरा' अपनी पत्तियों पर एक नसों का विष उत्पन्न करता है, यह विष इन पत्तों को खाने वाले अधिकतर कीड़ों के दिल की धड़कन बन्द कर देता है। जाहिर है हैलिको-नियस लारवे पर इस विष का प्रभाव होना बन्द हो गया होगा तभी इस पौधे को झूठे अंडों से धोखा देने का तरीका अपनाना पड़ा होगा।

डा० विलियम की आशा है कि उनकी पौधों की सुरक्षा के तरीकों की खोज से कृषि को हानि पहुंचाने वाले कीड़े-मकौड़ों को भी नष्ट किया जा सकेगा।

प्र० : संसार की समुद्र के नीचे बनी सबसे लम्बी सुरंग कहां बनी है और इसे बनाने में कितना समय लगा है ?

उ० : लगभग पांच सौ फीट समुद्री पानी के नीचे और कठोर ज्वालामुखी से बनी चट्टानों में से सुगारु स्ट्रेट के आर-पार जापान ने एक 33 मील लम्बी 'सेकान सुरंग' का निर्माण हाल ही में पूरा किया है।

पिछले 17 वर्ष से दिन-रात जापान के दो 1800 मजदूरों के ग्रुप एक 'होन्शू' की ओर से रहा है। दूसरा द्वीप से उत्तर की ओर होकायडू से एक-दूसरे की ओर निरन्तर बढ़ रहे हैं। हालांकि खुदाई का कार्य एक घंटे में कुछ इंच ही प्रगति कर पाता था फिर भी आशा अनुसार 1983 में ये दोनों ग्रुप एक-दूसरे से आ मिले और इस अनोखी सुरंग के बनाने का काम पूरा हो गया। आवश्यक सड़क बनने और दो उत्तर की ओर जाने वाली ऐक्सटेन्शन पूरी हो जाने पर जापान रेलवे 160 मील प्रति घण्टे चलने वाली 'बुलैट ट्रेन' दुनिया की इस सबसे लम्बी सुरंग में चला देंगे।

खुदाई के कुछ भी भाग का कार्य पूरा होते ही कार्यकर्त्ता उस पर 6 से 12 इंच मोटी जल्दी सूखने वाली सीमेंट की तह बिछा देते हैं जिससे उसकी दीवारों से चट्टानें बाहर नहीं आ पातीं।

सुरंग का तला जो कि बहुत ही कठिन गहराइयों में जाता है को सुरंग के मुँह से 300 फीट आगे पहले सीमेंट-पानी और कांच के घोल से भर दिया जाता है। यह घोल समुद्री तले की दरारें ऊबड़-खाबड़ धरती को भर देता है साथ ही तले से निकलने वाले पानी के स्त्रोत भी बन्द कर देता है।

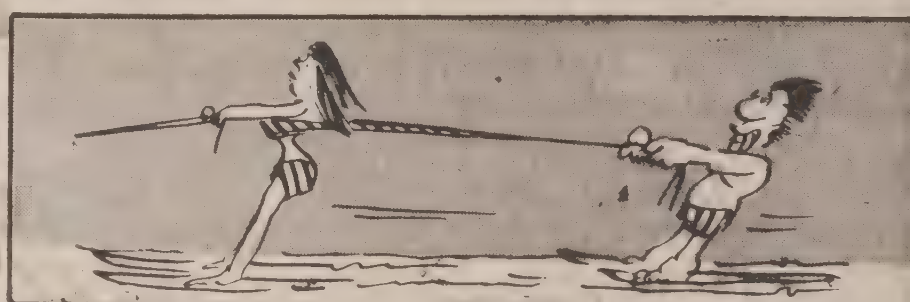
जापान इस अति अद्भुत सुरंग के काम में आने योग्य बन जाने के बाद कुछ विशेष सावधानियों का प्रयोग करेगा। एक दबा हुआ भूकम्प पता लगाने का यन्त्र सिसमोटाफ बहुत हल्के से भूकम्प का भी तुरन्त पता लगा लेगा, स ही इस सुरंग के हर 30 मिनट बाद ह साफ करने के यन्त्र बिजली फेल हो ज पर भी अपना कार्य ज्यों का त्यों क रहेंगे। भीमकाय पम्प पर हर सम 700,000 गैलन तक पानी की बाढ़ एक मिनट में कन्ट्रोल करने के लि तैयार रहेंगे।

शायद किसी का ख्याल हो कि ब्य को बढ़ा कर बताना जापानियों परम्परा ही है। 'सेकन सुरंग' की कीम पांच वर्ष पहले 666,000,000 डाल थी जो कि अब बढ़कर लगभग 2 अर डालर हो गई है।

प्र० : चोट लगने पर शरीर प नीले और काले निशान क्यों पड़ जाते

उ० : वास्तव में चोट लग जा पर नीला या काला निशान काला नीला रंग का नहीं होता। यह गह लाल रंग का होता है। परन्तु हम साध रण चोट लगे स्थान को भी नीला कह हैं क्योंकि त्वचा में से इसका ऐसा ही दिखाई देता है।

इसलिये साधारण-सी चोट से प



नील को आसानी से नजरन्दाज किय जा सकते। परन्तु हर हाल में नील प जाने पर या दिखाई देने पर भी इस चो में बहुत सी नन्हीं रक्त नाड़ियां औ हजारों विशेष प्रकार के श्वेत अणु य 'व्हाईट ब्लड सैल' लपेट में आ गए हो हैं। नील पड़ना तथा उसका फिर ठीक होकर स्वस्थ होना एक बहुत पेचीदा मकेनिसम है जिससे शरीर बिखर हुई वस्तु की सफाई करता है। प्रहार फलस्वरूप, ऊपरी त्वचा के नीचे की नाजु केपिलरी या रक्त नाड़ियां फट जाती जिससे उसके आसपास रक्त बिखर जात है। यह रक्त त्वचा की ओर गहरी तह में रिस कर पहुंच जाता है और वहां ए त्रित हो एक दुखने वाला गहरे रंग क स्थान बना देता है। यह वह नील जिसकी चोट को हम देखते ही तुरन्त र बदल जाने से पहचान लेते हैं।



सिलबिल पिलपिल
घोर तपस्या
पिछले अंक में आपने पढ़ा क्रिकेट टीम की पाकिस्तान में हुई हार से सिलबिल पिलपिल को घोर दुःख होता है और वह कुछ करने की ठान लेते हैं। गरीब चन्द की सलाह पर सिलबिल अपने बेड रूम में एक टांग पर खड़े होकर शिवजी को रिझाने के लिए घोर तपस्या शुरू करता है ताकि भारतीय क्रिकेट के लिए वर मांग सके।
गरीबे बड़ी देरी हो रही है। तपस्या को शुरू हुए दो घंटे हो गए लेकिन अभी तक कुछ हुआ नहीं। कुछ खड़का-धड़का नहीं हुआ। मेनका और उर्वशी कैबरे डॉस दिखाने के लिए नहीं आईं।
धीरज रखो।
इतना बड़ा काम इतनी उतावली में थोड़े ही होवे है। पुराने जमाने में ऋषि मुनि सैकड़ों साल तपस्या करते थे तब जाकर देवता दर्शन देते थे। जब इन्द्र देवता का सिंहासन डोलेगा तब ···देखना यह तपस्या रूम से कैसी आवाज आ रही है?
याड़ी यह आवाज कैसी आ रही है? क्या राक्षस आकर तुझे डराने की कोशिश कर रहे हैं? तू बावला मत हो, हम तेरे भाई बाहर खड़े हैं—यह तुझे तपस्या से डिगाने के लिए बहुत कुछ करेंगे—अपनी बीड़ियां तेरी छाती पर बुझायेंगे तेरे सिर पर उबलती काफी उंडेलेंगे लेकिन तू डरना मत।
यह गर्गल की आवाज राक्षसों की नहीं है। मैं बाथरूम में हूं। फ्लश चलने की आवाज है···
राक्षस जब आयेंगे तब देख लूंगा।
हे भगवान, यह घनचक्कर अपनी तपस्या में खुद विघ्न डाल कर बाथरूम में घुसा हुआ है। इसे तो अपनी जगे से हिलना भी नहीं चाहिये था। यह तपस्या है कोई रणजी ट्राफी मैच थोड़े ही है।
वह तपस्या करते हुए पलकें भी नहीं झपकाते थे।
भाई यह भी तो एक इंसान ही है, बाथरूम तो जाना ही पड़ता है। ऋषि मुनि भी तो करते ही होंगे यह···वह क्या वाटरप्रूफ थे?
तने यह क्या कर दिया? अपनी तपस्या बाथरूम जाकर भंग कर दी। देशी घी में वनस्पति घी का तड़का लगा दिया।
ऐह! बाथरूम जाने से कहीं तपस्या भंग हो सकती है? आदमी ऐसे ही थोड़े ही रह सकता है।
रहना पड़ेगा।
इसका मतलब क्या हुआ? मुझे खाना भी नहीं मिलेगा। खाना नहीं खाऊंगा तो तपस्या कैसे करूंगा? घोर तपस्या के लिए शरीर में ताकत होनी चाहिए। मैं खुराक नहीं खाऊंगा तो ताकत कहां से आएगी? मुझे तो तपस्या के दौरान आमलेट और चिकनाई मिलनी चाहिए।
मुझे कुछ दाल में काला नजर आता है। यह चूहा···


भाई जी मुझे पक्का शक हो रहा है। यह चूहा दुश्मनों से मिला हुआ है। देखो बाथरूम जाने को मना करता है। मुझे कहता है कि एक जगे से हिलना भी नहीं पड़ेगा। खाना भी नहीं खाना होगा। थम बताओ एक जाट को खाना नहीं मिलेगा तो वह जिन्दा कैसे रहेगा। तपस्या भूमि में ट्रैक्टर चलायेगा। भाई जी यह मुझे भूखों मरवाना चाहता है तपस्या के बहाने। यह सोचता होगा यह मर जायेगा तो तपस्या पूरी नहीं होगी और शिवजी दर्शन नहीं देंगे, हम वर नहीं मांग सकेंगे और हमारी टीम हार जायेगी।
हूं
मुझे भी शक हो रहा है।
नमक हराम चूहे, तू हमारे दुश्मनों का जासूस है। हमें भूखों मरवाना चाहता है? बता तूने वेस्टइंडीज के कप्तान क्लाइव लायड से कितने पैसे रिश्वत में खाए हैं?
ऐह।
छोटे भाई तू फिक्र मत कर। इस चूहे की चालों को हम नाकाम बनाकर रख देंगे। यह हमें मरवाने के लिए हजारों साल पहले का फार्मूला पिला रहा है। हम तपस्या का अल्ट्रा माडर्न तरीका अपनायेंगे।
माडर्न जमाने में हर चीज़ मॉड होनी चाहिए।
भाई जी थम जो कह रहे हो वह ठीक है? चूहा कहता है कि पुराने ऋषि मुनि केवल लंगोट पहन कर तपस्या किया करते थे और थम मुझे धारीदार टी शर्ट और जीन पहनने के लिए कह रहे हो। इस ड्रेस में तपस्या से शिवजी नाराज तो नहीं हो जायेंगे?
लंगोट वाला जमाना निकल गया है। देवलोक में भी तो नये जमाने की हवा चल रही होगी। वहां भी डिस्को खुल गये होंगे। चूहा तो उस जमाने की बात कर रहा है जब कपड़े का आविष्कार ही नहीं हुआ था। डनिम का नाम तक लोगों ने नहीं सुना था। माडर्न तपस्या जींस और धारीदार टीशर्ट में ही होगी।
और मैं इस एग्जीक्यूटिव चेयर पर बैठूंगा। खड़े रहने की कोई जरूरत नहीं है। मुनि लोग खड़े होकर तपस्या करते थे, उस वक्त कुर्सियां मिलती ही कहां थीं? यह तपस्या तो बड़ी अच्छी चीज है।
मैं कहता हूं यह पागलपन बंद करो, थम दो तपस्या का मजाक बना रहे हो।
अगर तूने हमारे मामलों में टांग अड़ाना नहीं छोड़ा तो मैं तुझे कच्चा ही चबा जाऊंगा। हमें उल्टे रास्ते पर डालकर दुश्मनों को जितवाना चाहता है?



सिल्लबिल्ल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये



मनोज कुमार गर्ग, हिन्डौन सिटी : आज के युग में महान आदमी किसको समझा जाता है।

उ० : जिसके पास सबसे ज्यादा चमचे हों ?

संगीता भाटिया, मोती नगर : बताएं कि पत्नी भी प्रेयसी बन सकती है क्या ?

उ० : किसी और की पत्नी आपकी प्रेयसी ही बन सकती है। आपकी पत्नी किसी और की।

श्याम गागनानी, **मुर्तिजापुर** : गरीबचंद जी, चांद की तारीफ सितारों से होती है तो दीवाना की तारीफ किससे होती है ?

उ० : तारों से ही। जब आपको गम में उदासी के कारण दिन में भी तारे नजर आ रहे हों तो उस समय दीवाना काम करेगा।

सुरेश कुमार खेमका, जमशेदपुर—माई डियर गरीबचन्द जी, लोग आपको गरीब चन्द की जगह अमीर चन्द क्यों नहीं कहते हैं ?

उ. : भाई आपको नरेशकुमार नहीं कहते लोग ?

केवल प्रकाश दुग्रा, काशीपुर—सिलबिल पिलपिल बात-बात में जिस तरह आपको चूहा कहकर अपमानित करते हैं और कोई होना तो कभी का इन जाहिलों का साथ छोड चुका होना ?

उ. : आजकल सच कहने वाले नुकसान नहीं करते और चापलूसी करने वाले पीठ में छुरा मार देते हैं।

रामदेव मुन्डा, बेरमो—गरीब चन्द जी, आप पूंछ और मूंछ से अधिक काम क्यों लेते हैं ।

उ. : बीच का हिस्सा ईमानदार है अपना काम अपने आप 24 घंटे करता रहता है। पूंछ व मूंछ से काम लेना पड़ता है।

प्रेम बाबू शर्मा, 'सुमन'—गरीब चन्द, दो दुश्मन एक दूसरे को देखकर कब मुस्कुराते हैं ?

उ. : जब जेल में एक ही ऐन्ट्री में अपने आप को पाते हैं।

प्र. : गरीब चन्द जी, आजकल लोग सीट के लिए क्यों झगड़ते हैं।

उ. : सीट बैठने के लिए होती है। आजकल झूठ का बोलबाला हूं और झूठ के पैर नही होते इसीलिए सबको बैठने के लिए सीट की तलाश है।

प्र. : गरीबचन्द जी, काश! हम लड़की होते।

उ. : आपका नाम प्रेमिका बीबी शर्मा होता।

सुरेन्द्र खुराना 'पप्पू' मोगा—मिस्टर गरीब चन्द जी, आपने आज तक कितने अनाज के गोदामों पर डाका डाला है ?

उ. : जिस डेली डायरी में यह सब दर्ज था उसे कोई मेरा ही भाई कुतर गया।

रनुमन नैथानी—गरीब चन्द जी, यदि आपका नाम फकीर चन्द होता तो ज्यादा अच्छा होता आपका क्या ख्याल है ?

उ. : गरीब और फकीर में बड़ा फर्क है। गरीब वह है जो अमीर नहीं बन पाया। मजबूरी में ही गरीब रह गया। फकीर वह है जो अमीर बनना ही नहीं चाहता।

शाम सुन्दर पासी, कपूरथला—आदमी औरत की बुराई पर खुश कब होता है।

उ. : जब वह औरत पड़ोसी की बीबी हो और बुराई का मेवा आपको मिल रहा हो।

सुरेश खुराना 'पप्पी', जींद—शादी के मौके पर दूल्हे के जूते उसकी सालियां ही क्यों छुपाती हैं उसके सास या ससुर क्यों नहीं ?

उ. : सास ससुर छुपायें तो दूल्हा फेरे पड़ने से पहले बदले में सोने के जूते की मांग करने लगेगा।

बाल किशन उत्तर रेलवे स्टेडियम—गरीबचन्द जी, अगर आप सचमुच गरीब हैं तो क्या मैं कुछ मदद कर सकता हूं।

उ. भारत की 60 प्रतिशत जनता गरीबी की रेखा के नीचे रह रही है। उनमें से किसी एक की मदद करने का आपको ख्याल नहीं आया।

हरीश 'केटी' दीक्षितपुरा—'सिलबिल पिलपिल' आपके मित्र कैसे बन गए ?

उ. : सिलबिल पिलपिल ने एक रात मुझे अपनी धोती कुतरते रंगे हाथ पकड़ लिया फिर हम तीनों एक दूसरे की दोस्ती के रंग में रंग गए।

जय भगवान निराला, रिवाड़ी—डियर गरीब चन्द जी, क्या आप पान चबाते हैं।

उ. : मैं पान से परहेज करता हूं, कुतरना मेरा पेशा है और मैं पान चबा कर दांतों का सत्यानाश क्यों करूं।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—गरीब चन्द जी, बुढ़ापे में जवानी की याद क्यों आती है ?

उ. : जो पास में न हो उसी की याद आती है।

कमल कुमार पना, देहरादून—गरीब चन्द जी, हमारे घर में एक बिल्ली है। इससे पहले भी वह आपके बिरादरी के कई चूहों की गर्दन मरोड़ चुकी है।

क्या आप हमारी बिल्ली के साथ फ्री स्टाईल कुश्ती लड़ना पसन्द करोगे ?

उ. : अगर कुश्ती में रेफ्री वही हो जो दारा सिंह की फ्री स्टायल कुश्तियों में होते हैं जो हमेशा दारा सिंह को जिताते हैं।

राजीव गुप्ता 'मयंक'—मोटू-पतलू असली कौन से हैं ? 'दीवाना' के या लोटपोट' के।'

उ. : यह फैसला करना पाठकों का ही काम है।

उमेश ज्ञानचन्दानी 'प्रेमी' विलासपुर—नेता 'कुर्सी' का दीवाना रहता है, हम 'दीवाना' के। और आप…?

उ. : अच्छे प्रश्नों के जिनमें केवल यह न पूछा गया हो मेरा नाम गरीबचन्द क्यों पड़ा, वगैरह।

सुशील चन्द्र गुप्त, खगड़िया—आपके जवाब बड़े ही सटीक होते हैं। क्या आप बतायेंगे किन बुद्धिमानों का दिमाग कुतर कर खाया है ?

उ. : मैंने एक ही सावधानी बरती है। गलती से भी कभी किसी नेता का दिमाग नहीं कुतरा।

वेद प्रकाश 'अमित', दिल्ली—मार लात की बुरी या बात की ?

उ. : यह इस बात पर निर्भर करेगा कि आप लात किस की खा रहे हैं हाथी की या चूहे की।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



फैण्टम – गुमनाम कमाण्डर
अगर यह जाग जाये तो यही और दे देना।
जाफाल। बास तुम्हें बुला रहा है।
जैसे ही ललोंगो का ललोनी सोता है।
ल्हाईगन में एक अजनबी ललोनी को पूछ रहा है, क्या तुम दोनों को जंगल में किसी ने देखा था
ओह, नहीं। ईमान से गुरु।
ईमान यहां पर बुरा शब्द है, आशा है तुम सच बोल रहे हो, उस लड़के के साथ जाओ।
!!
कुत्ते वाला बड़ा आदमी, पावर हाउस जैसा है, तुमने उसे देखा होगा, दूध पीता है।
वह ही ललोनी को पूछ रहा था?
गुरु उसे पहले कभी नहीं देखा।
तुम्हारी बेवकूफी के कारण जंगल पैट्रोल हमारे पीछे आ गया, क्या यह पैट्रोल मैन है?
एक दूध पीने वाला? नहीं श्रीमान्।
उसके बारे में पता लगाओ, 'ताला' की मदद लो।
BLUE DRA
बज...
बज...बज...बज....
मैंने सुना है तुम एक व्यक्ति को ढूंढ़ रहे हो।
हां—वो तो मैं ढूंढ़ रहा हूं नाम ललोनी है, जानती हो उसे?
जिसे तुम ढूंढ़ रहे हो उसे कैसे बुलाते हो?
ललोंगो के ललोनी।
मेरा नाम 'ताला' है तुम्हारा क्या है?
वाकर। क्या तुम ललोनी को जानती हो?
नहीं, पर शायद मैं किसी को जानती हूं जो उसे जानता हो, मुझे अपनी याद ताजा करने को ड्रिंक चाहिये कृपया—
यह समय बिलकुल बरबाद नहीं करती।


मेरे लिए, हमेशा वाला, पेंट ।
दूध ।
हां ।
ठीक —
धन्यवाद ।
ताला तुम्हारा हमेशा वाला, मिस्टर आपका हमेशा वाला ।
क्या तुमने उसका नाम पता किया ?
हां। वाकर, पर वह कौन है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता ।
जब वह वो दूध पी लेगा, उसे किसी चीज का फर्क नहीं पड़ेगा ।
!
आपकी मेहत के लिये मि० वाकर और आपको वह मिल जाय जिसे आप ढूंढ़ रहे हैं ।
तुम्हारी मदद से—धन्यवाद ।
उसके दूध के गलास में क्या है ?
साधारण है ।
मूर्ख, मुझे वह जिन्दा चाहिए, पूछताछ के लिए ।
बहुत देर कर दी, उसकी एक घूंट और खत्म ।
तुम्हारी सेहत के लिए, तुम इन्तजार किस बात की कर रहे हो ? पी लो मि० वाकर।
यह अचानक उत्सुक हो उठी, घबरा रही है ।
एक घूंट में, मि० वाकर ।
एक क्षण 'ताला'—
स्निफ···
भौं भौं···
हमारे प्रदेश में अजनबी विश्वास व्यक्त करने के लिए गलास बदलते हैं, हम भी बदलें, 'नाला',
परन्तु···परन्तु मुझे ···दूध पसन्द नहीं है···

मूवी मसाला

'कुली फिल्म को दुखान्त के बजाए अब सुखान्त बनाने का विचार—

'कुली' की चरमसीमा उसके हीरो अमिताभ की मौत का दृश्य, अमिताभ के इस फिल्म की शूटिंग के दौरान चोट लगने से बहुत पहले ही फिलमाया जा चुका था। परन्तु अब अमिताभ के चोट से स्वस्थ हो जाने के बाद मनमोहन देसाई घबराहट के शिकार हो गए हैं. उनका विचार है अमिताभ के चाहने वाले प्रशंसक अपने हीरो की मौत स्क्रीन पर देखना पसंद नहीं करेंगे।

देसाई पूरे के पूरे इस भाग को अमिताभ के कार्य करने लायक होते ही दोबारा फिल्मायेंगे। और फिल्म की क्लाईमैक्स को बदल कर सुखान्त कर देंगे।

क्या इसका यह मतलब होगा कि कोई भी प्रोड्यूसर अब अमिताभ के हीरो का रोल होने पर दुःख भरी फिल्म नहीं बना पायेंगे?



इसी बीच अमिताभ के दिल्ली में राजनीति से लगाव सा देख बम्बई में उनसे काम करवाने की आशा लिए प्रोड्यूसर कुछ घबरा से गए हैं। लगता है इसके परिणामस्वरूप अमिताभ को बहुत से नए कार्यों से वंचित रखा जाएगा। फिल्मों के उच्च वक्ताओं का कहना है अमिताभ का फिल्म छोड़ना तो लगभग निश्चित ही है क्योंकि अब वे एक्शन फिल्मों में काम नहीं कर पायेंगे। अमिताभ के अभिनय की विशेषता, इसके साथ-साथ उनका विचार है कि रोमांटिक रोलों में अमिताभ भी अपनी चालीसवीं वर्षगांठ के बाद यूं भी बड़े हो गए।

अमित के जीवन से रंगोली को विदा—

जबकि रेखा ने साड़ी और सिंदूर से माडर्न ड्रैसस और जीन्स पहनना शुरू कर दिया है अपना झुकाव अमिताभ के बजाय संजय की ओर करने का चिन्ह, तो अमिताभ भी रेखा से किनारा करने में पीछे नहीं रहे। समझा जाता है अमित ने एशियाड और राजनीति के लिए दिल्ली आने से पहले, अपने लेटर हैडस और अन्य स्टेशनरी को दुबारा डिजाइन कर दिया, उनकी स्टेशनरी रेखा की पसंद से रंगोली डिजाइन की बनाई गयी थी जो अब जया की रुचि के बंगाली डिजाइन में छपवाई गयी है।

गौरवपूर्ण भारतीय दाखिला

भारत की मिनिस्ट्री आफ इन्फोरमेशन और ब्राडकास्टिंग ने पेरिस के विख्यात जार्ज पोम्पीड् सेंटर के साथ वहां मार्च-अप्रेल 1983 में भारतीय फिल्म समारोह मनाने का निर्णय लिया।

इस समारोह का महत्व इससे अधिक बढ़ जाता है कि पहली बार कम से कम 92 भारतीय फिल्मों को वहां दर्शाया जायेगा—अब तक किसी भी विदेशी समारोह में भाग लेने वाली फिल्मों से अधिक—साथ ही इसमें भारत के विख्यात निर्देशकों जैसे सत्यजीत राय मृणाल सेन, श्याम बेनिगल, रितविक घटक की फ़िल्मों के साथ-साथ भारत की पुरानी चुनिन्दा फिल्में जैसे 'लाईट, आफ एशिया,' 'सन्त तुकाराम,' 'सिकन्दर,' और 'डायमन्डक्वीन' भी दिखाई जायेंगी।

दिन सदा एक से सुनहरे नहीं रहते—

यह तो संसार के सभी कलाकारों के लिए एक सा ही है। एक बार नीचे गिर जाने पर कलाकार स्वयं से समझौता नहीं कर पाते। यही राजेश खन्ना के साथ हैदराबाद में हुआ। जहां वे 'आशा ज्योति' की शूटिंग के लिए गए हुए थे। वे श्याम बेनिगल के युनिट के लोगों से मिलने चले गए क्योंकि वे लोग भी पास ही शूटिंग कर रहे थे। परन्तु वहां उन पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। वहां से वे नाराज होकर अपने होटल पहुंचे और शराब में डूब गये।

और अब उनके विषय में दूसरी उदास करने वाली खबर आ गई। राजेश खन्ना और टीना मुनीम के बीच जो समझौता चल रहा था एक तरह से किनारे पर आ गया। टीना मुनीम कुछ आराम और स्वयं पर सोच विचार करने के लिए कुछ दिन के लिए अमरीका चली गई और बेचारा राजेश पहले से भी अधिक उदास और अकेला हो गया।

हास्य व्यंग्य

मिरजा जुगनू

मूल : कन्हैयालाल कपूर

मिरजा जुगनू की कमजोरी शराब है न औरत, बल्कि पान ! आप पान इतनी अधिकता से खाते हैं, जैसे झूठा आदमी कसमें या काम-चोर गालियां। खैर अगर पान खा कर चुप रहे हों तो कोई हर्ज नहीं। अपना-अपना शौक है। किसी को गम खाने में लुत्फ आता है किसी को मार खाने में और किसी को पान खाने में,लेकिन मुसीबत यह है कि मिरजा पान खाते ही नहीं, दिन-रात उसके गुण भी गाते हैं। उन्होंने मशहूर कहावत 'जिसका खाये, उसी का गाये' में यह संशोधन किया है-'जिसको खाये, उसी का गाये'। जो शख्स पान नहीं खाता, उसकी नजर में अव्वल दर्जे का रुचिहीन है। अक्सर फरमाया करते हैं-पान खाये बिना लेखन व भाषण में रंगीनी पैदा करने की कोशिश गुलाल के बिना होली खेलने के समान है।'

मिरजा साहब यू. पी. से पंजाब आए हैं। इसलिए उन्हें बनारसी और लखनवी पानों की याद हर समय सताती रहती है लखनऊ के पिस्तई पानों का जिक्र करते समय अक्सर उनकी आंखों में आंसू तैरने लगते हैं। 'अजी साहब ! क्या बात थी पिस्तई पानों की ! वल्लाह ! तले ऊपर चार गिलोरियां खाइए, चौदह तब तक रोशन हो जायें और अब यहां वह पान जहर मार कर खाना पड़ रहा है जिसे पान के बजाए ढाक का पत्ता कहना अधिक उचित होगा। इस पर सितम यह कि यहां करीब-करीब हर शख्स तम्बोली से खरीद कर खाता है। गजब खुदा का, बड़े-से बड़े रईस के यहां चले जाइए, मेज पर मिठाइयों और लस्सी के बड़े-बड़े गिलासों का अम्बारा लगा देगा, लेकिन पान फरमाइश कीजिए तो बगलें झांकने लगेगा। या झेंप मिटाने के लिए नौकर से कहेगा-'अरे भई चोखे लाल ! मिरजा साहब के लिए पान खरीदना तो याद ही नहीं रहा ! जरा लपक कर मातादीन पनवाडी से एक पान तो ले आओ।' फिर सहमा महसूस-सा बन कर आपसे ऐसा सवाल करेगा-जिसे सुनकर आपका जी सिर पीटने को चाहेगा क्यों साहब ! मीठा खायेंगे या इलायची सुपारी वाला ?' लाहौल विला कूवत ! पानों की बड़ी-बड़ी किस्में सुनने में आई, लेकिन यह बात आज तक समझ में नहीं आई कि यह मीठा पान क्या बला होती है। बारह मसालों का एक फजूल से हरे पत्ते में कुछ इस तरह लपेट देते हैं कि उस पर जोशांदे की पुड़िया का भ्रम होता है। उसे यह महाशय मीठा पान कहते है। साहब हद हो गई सितम-जरीफी की



इससे बेहतर होगा कि पान के बजाय आदमी दो तोले गुड़ या शक्कर फांक लिया करें।'

मिरजा जुगनू पान के इस कदर प्रेमी हैं कि जिस समय देखो पान खा रहे होंगे या पान की शान में कसीदा रच रहे होंगे। हमारा तो ख्याल है कि जबान के अलावा जो चीज सदा उनके बत्तीस दांतों में रहती है, वह पान या पान का जिक्र ही है। यह खाने के बिना जिंदा रह सकते हैं, चाय न मिले तो कोई बात नहीं, लेकिन पान के बिना जल-बिन मीन की तरह तड़फने लगते हैं। एक बार हमने डरते-डरते कहा-'मिरजा साहब ! पान खा-खाकर आपने दांतों का सत्यानाश कर लिया है। आपके मुंह में अब दांत नहीं गोया किसी गले-सड़े अनार के दाने हैं। खुदा के लिए अब तो पान खाना छोड़ दीजिए ! मिरजा साहब ने पीक की पिचकारी हमारी सफेद पतलून पर छोड़ते हुए उत्तर दिया-'क्या कहा, 'पान छोड़ दूं' यह क्यों नहीं कहते, खुदकशी कर लें। अजी हजरत —

पान है तो जहान है प्यारे।

आपके अजीज सर की कसम हम तो जन्नत में भी रहने से इन्कार कर देंगे, अगर वहां पान से वंचित रहना पड़ा। आपको मालूम है कि आदरणीय पिताजी हमें बिलायत भेजने पर आग्रहशील थे। फरमाते थे कि दो एक साल आक्सफोर्ड गुजार आओ, जिन्दगी बन जायेगी, लेकिन हमने वहां जाने से साफ इन्कार कर दिया, क्योंकि हम जानते थे कि इंग्लैंड में पान कहां ?'

'वह तो शायद आपने अच्छा किया बिलायत नहीं गए। नहीं तो फिरंगियों की पतलूनों की खैर नहीं थी।' हमने मिरजा को बताते हुए कहा—'लेकिन यह जो आपने हमारी मक्खन जीन की कीमती पतलून को तबाह कर दिया, यह हमें किस गुनाह की सजा दी।'

मिरजा साहब ने अपना पीक से भरा हुआ मुंह ऊपर उठाकर और आवश्यकताअनुसार दीवार पर पीक से गुलकारी करते हुए फरमाया-'अजी हजरत ! यह सब आपका कसूर है। यह दीवानखाने में उगलदान न रखने की सजा है जो अपको दी गई थी। खुदा के बंदे ! आलम-गलम से सारा कमरा भर रखा है। लेकिन इतनी तौफीक नहीं हुई कि उगलदान ही खरीद लें। अपने लिए नहीं तो मेहमानों के लिए ही सही। कल्ले में जब इक्कट्ठी चार गिलौरियां हों और मुश्की दाने का तम्बाकू जरूरत से ज्यादा तेज हो और सामने उगलदान मौजूद न हो तो आप खुद बताइए बिजली की तरह पीक आपकी पतलून पर नहीं गिरेगी तो कहां गिरेगी ?'

हमें मिरजा जुगनू के घर जब जाने का मौका मिला तो सदा उन्हें इस किस्म के मनोविनोद में मग्न पाया, कभी छालियें कुतर रहे हैं, कत्थे को केवड़े की खुशबू में बसा रहे हैं। चख-चक्ख-चक्ख कर देख रहे हैं कि मनोवांछित तेजी का हुआ है या नहीं। और कभी मुरादाबादी तम्बाकू की बलाएं ले रहे हैं। कई बार उनसे निवेदन किया-'आप इतने विद्वान हैं। गजल कहने में उस्ताद मान जाते हैं। मशायरों को लूट लेना आपके बांए हाथ का खेल है। शराफत और भद्रता की मुहल्ले भर में धूम है। फिर आप पान

खाने की आदत क्यों नहीं छोड़ सकते, जबकि आप जानते हैं कि पान दांतों और मसूड़ों के लिए हानिकारक है ?'

हर बार मिरजा बिगड़ कर फरमाते हैं—' हजरत ! हर बड़े शख्स में एकाध कमजोरी जरूर होती है। यह बात न हो तो उसका शुमार फरिश्तों में होने लगे। गालिब को ही लीजिए, इतने बड़े शायर, लेकिन मद्यपान की ऐसी लत पड़ी कि उधार पीने में भी उन्हें शरम नहीं थी। वह तो दुआ इसीलिए मांगते थे कि उन्हें शराब मिले। तुमने वह लतीफा सुना होगा। एक बार जब उन्हें शराब न मिली, तो उन्हे वुजू करके नमाज पढ़ने की ठानी। अभी वुजू ही कर पाए थे कि उनका एक शागिर्द कहीं से शराब की बोतल ले आया। फौरन नमाज पढ़ने का इरादा छोड़ दिया और शराब पीने लगे। शागिर्द ने पूछा-'नमाज नहीं पढ़िएगा क्या ?' हंस कर फरमाया, 'जिस चीज के लिए दुआ मांगनी थीं वह मिल गई। अब नमाज पढ़ने का फायदा ?'

'लेकिन मिरजा साहब। शराब की बात और है कि छुटती नहीं है मुंह से यह काफिर लगी हुई ! लेकिन पान में तो ऐसी कोई बात नहीं, हमने बहस को आगे बढ़ाने के लिए मशवरा दिया।

'अजी हजरत है ! मिरजा साहब ने फरमाया, 'पान खाने का लुत्फ पानखोर ही जानता है न, आप पाक बाज किस्म के लोग क्या जानें। उसके स्वाद का हाल तो बीरबल से पूछिए, जिसने अकबर के सवाल करने पर कि सबसे बड़ा पत्ता कौन-सा है। अर्ज किया था—'महाबली पान का पत्ता।' जिसे इस वक्त जिले इलाही खा रहे हैं।' लीजिए अब तो सनद भी मिल गई कि पान वह चीज है जिसे खुद मुगलेआजम ने मुंह लगाया। अब आइंदा हमारे पान खाने पर एतराज न कीजिएगा।'

'मगर फिर भी हमारा ख्याल है आप पानखोर न होते तो वली (अवतार) होते।'

'सुभान अल्लाह ! क्या पते की बात कही है आपने यानि सिर्फ इतनी-सी बात के लिए हम वली कहलावायें। पान-खोरी छोड़ दें न साहब। हमें यह खसारे का सौदा बिलकुल पसन्द नहीं। हमारा तो सिद्धांत है।'

तुम मेरा दिल मांग लो,
दिल की तमन्ना मांग लो।
पान देकर मुझसे तुम,
चाहो तो दुनियां मांग लो॥

और हां देखिए साहब ! अब बहस बन्द कीजिए। एक गिलौरी और अपने मुंह में डालिए और किसी लखनवी शायर का एक बेनजीर शेर सुनिए और सिर धुनिए कि पान के जिक्र ने शेर को कितना रंगीन बना दिया है।

हां तो वह शेर है—

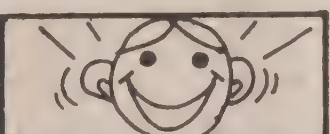
पान लग लग के मेरी जान किधर जाते हैं।
यह मेरे कत्ल के समान किधर जाते हैं।

हमने मिरजा साहब के आग्रह पर गिलौरी मुंह में डाली। शेर भी सुना और सुनने के बाद होंठों में गुनगुनाने लगे—

तुझे हम वली समझते,
जो न पानखोर होना।

—अनु. तरनजीत

हंसना मना है



एक व्यक्ति डाक्टर के पास गया और कहा, 'मेरी तबियत ठीक नहीं है।'

'क्या बात है ? तुम्हें क्या महसूस हो रहा है ?' डाक्टर ने पूछा।

'डाक्टर तो आप हैं, आप को ही पता लगाना चाहिए। 'रोगी ने कहा।

'फिर तो आप गलत स्थान पर आ गये, आपको तो घोड़ों के डाक्टर के पास जाना चाहिये। केवल वही बिना प्रश्न पूछे बीमारी का पता लगा लेते हैं।' डाक्टर ने फौरन जवाब दिया।

●

औषधि के प्रोफेसर साहब ने पेशाब का एक सेम्पिल विद्यार्थियों को दिखाया।

'तो फिर' वह बोले 'एसीडिटी का टेस्ट करने के लिए'—उन्होंने अपनी उंगली सेम्पिल में डाली। विद्यार्थियों ने भी अपने-अपने सेम्पिल में ऊंगली डाली।

'तुम अपनी ऊंगली अपने मुंह में डालो' और जैसे ही प्रोफेसर साहब ने डाली, विद्यार्थियों ने बेमन से उनका अनुकरण किया।

'परन्तु तुमने ध्यान दिया होगा मैंने वही उंगली मुंह में नहीं डाली थी', प्रोफेसर साहब आगे बोले।

●

चुनाव एजेन्ट ने एक घर का दरवाजा खटखटाया। उसे एक भीमकाय स्त्री ने खोला और गुर्राई—'तुम्हें क्या चाहिए ?'

'मैं जानना चाहता हूं आपके पति किस पार्टी के हैं ?' चुनाव एजेन्ट ने पूछा।

'मैं ही वह पार्टी हूं जिस पार्टी के हैं मेरे पति' स्त्री दहाड़ी।

●

यदि किसी व्यक्ति को 50 रु. देने हैं तो वह कर्जदार है। यदि उसे 50,000 रु. देने हैं तो वह व्यापार में है। यदि उसे 5, 000, 000 रु. देने हैं तो बड़ा उद्योगपति है। यदि उसे 50,000, 000 रु. देने हैं तो वह सरकार है।

●

'मम्मी, मेरा जन्म कैसे हुआ था ?' एक नन्हें स्कूल के बच्चे ने पूछा।

'एक बड़ा सा सफेद बगुला तुम्हें लाया था' 'मम्मी बोली 'और आपका जन्म कैसे हुआ था ?' उसने फिर पूछा, 'एक बड़ा सफेद बगुला नानी को मुझे दे गया था' मम्मी ने उत्तर दिया।

'वही बगुला उन्हें भी लाया था' मम्मी ने कहा। अगले दिन स्कूल में उसने अपने परिवार पर लेख आरम्भ किया, 'हमारे परिवार में तीन पीढ़ियों से कोई प्राकृतिक जन्म नहीं हुआ।'

●

बूढ़े आदमी ने पड़ौसी से कहा कि 'तुम रोज सुबह जो भजन बजाते हो, वह मुझे बहुत अच्छा लगता है।'

'ओह हां ! मैं रोज ही वह भजन बजाता हूं इससे मुझे अंडे उबालने का एक दम पूरा समय पता चल जाता है।'

●

ताएक्वोन्डो

पाठ ४

1. चौंग गुल सियोगी सोनाल जिरुगी—

(आगे धकेलने की मुद्रा—हाथ के चाकू प्रहार

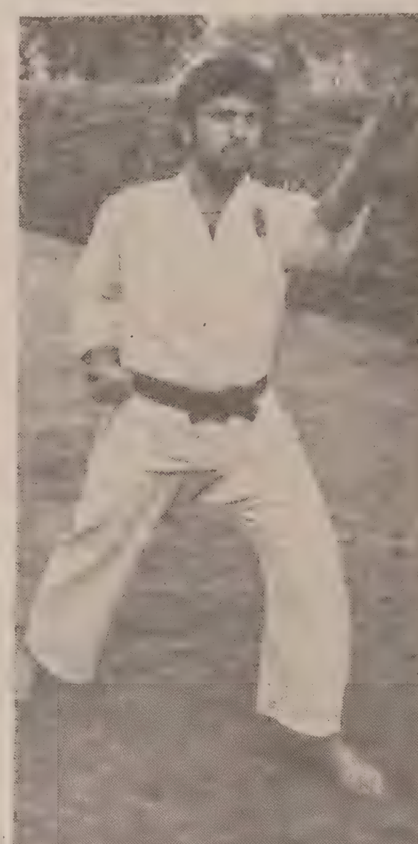
1. चौंग बाई सियोगी मुद्रा में खड़े होइये (पाठ-1) बायीं टांग को दायीं टांग की ओर लाइये साथ ही बायें हाथ को सीधा रखते हुए पीछे ले जाइये।

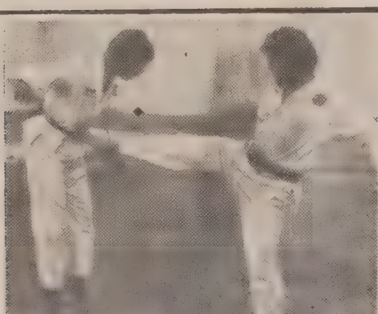
2. हाथ और टांग दोनों को आगे लाइये। हाथ का बाहरी किनारा विरोधी के गले पर प्रहार करने के काम में लाया जाता है।

सोनल्ल—हाथ का चाकू या हाथ का किनारा, आक्रमण तथा सुरक्षा टेकनीक में एक महत्वपूर्ण पार्ट अदा करता है। सोन्नाल उस भाग को कहा जाता है जिससे आक्रमण या सुरक्षा की जाती है।









K



K 1.

पाठ ५

चागी (लात मारना)

अपने निशाने को लात मे मारने को 'चागी' कहते हैं !

के. अप—या पुसुगी (सामने की लात)

ग्यारुगी मुद्रा में खड़े हों। ग्यारुगी फ्रीस्टाईल कम्पीटीशन मुद्रा है। तश्वीर के अनुसार दायीं टांग को पीछे ले जाओ दोनों हाथ अपने शरीर के सामने रखो !

दायीं टांग को आगे लाकर घुटने मोड़ो और टांग को कमर तक ऊपर उठाओ। अब तेजी से टांग खोल कर लात मारो। पैर की गेंद पंजे ऊपर मोड़ कर विद्रोही की कमर या चेहरे पर प्रहार करने में प्रयुक्त' होता है।



K-2

पृष्ठ १८ से आगे

पारदर्शी होने के कारण उसे सच ही बोलना पड़ रहा था ।

'हैं ?' विश ने अचानक कुर्सी में सीधे होते हुए कहा ।

'क्या' ? किलाचन्द ने पूछा ।

'पारदर्शी होने का कारण, सच बोलना पड़ रहा था 'मैं कुछ समझा नहीं यह बात विश बोला ।

'समझा मैं भी नहीं' किलाचन्द बोला 'पर बात यही है, मैं तुम्हें पूरा यकीन दिलाता हूं, बात ऐसी ही है। मुझे विश्वास नहीं कभी उसके मन में लेश-मात्र भी सच की भावना होगी । उसने मुझे बताया उसकी मृत्यु कैसे हुई थी । वह अपने घर के तहखाने में मोमबत्ती लेकर गैस की लीकेज देखने गया था । उसने मुझे बताया कि उस समय वह एक प्राईवेट स्कूल में अंग्रेजी का उच्च अध्यापक था । जब उसकी मृत्यु हुई थी ।

'बेचारा बदनसीब !' मैं बोला ।

'मैंने भी यही सोचा था और जितनी ज्यादा उससे बात की उतना ही अधिक मैंने इस पर विचार किया तो वह जीवन में भी लक्ष्यहीन था और जीवन के बाहर भी उसी प्रकार लक्ष्य-हीन ही रहा । उसने संसार में अपने माता-पिता और स्कूल के मास्टरों की बात बड़े नीच रूप से की । मेरे विचार से संसार में कभी उसका कोई अच्छा मित्र नहीं था, न ही जीवन में उसे सफलता मिली थी । उसने खेलों से जी चुराया था और परीक्षाओं में असफलता ही पाई थी, कुछ लोगों के साथ ऐसा ही होता है, वह बोला ।

'जब कभी भी मैं परीक्षा के कमरे या कहीं और गया, हमेशा कुछ गलत हो जाता था । बेशक, उसकी शादी होने के लिए सगाई भी हो गई थी—जाहिर है अपने ही जैसी स्त्री से हुई होगी जबकि गैस के लीक के कारण उसके जीवन का क्रम समाप्त हो गया ?' और तुम अब कहां हो ?' मैंने पूछा ।

'स्वर्ग में——?'

'इस बात का उसका कोई सही उत्तर नहीं था, जो बात उसने मुझे समझाई वह यह थी कि वह एक ऐसी स्थिति में है जो बीच की स्थिति है जो उन आत्माओं की विशेष स्थिति है जिन में अच्छाई या पाप की पूरी मात्रा नहीं पाई जाती । मुझे नहीं मालूम इस विषय में वह बिलकुल सफाई से न बता सका कि दूसरी ओर क्या है कैसा देश है कैसी जगह है इत्यादि । ऐसे लन्दनीया कमजोर सिलबिले नौजवानों की जो कि अभी लगभग अपने जीवन का आरम्भ ही कर रहे होते थे भूत विचरन की बहुत बात होती हैं । हाँ भूत विचरन उन्हें यह एक बहुत ही रोमांचकारी साहस कार्य लगता है और अधिकतर वे इसमें भी गड़बड़ कर जाते होंगे । और इस प्रकार वह आया था ।'

'पर क्या वाकई !' विश ने उत्तेजित हो कहा ।

'उसने मुझे यही खाका दिखाया था' 'किलाचन्द ने विनम्र रूप से कहा । हो सकता है उस समय मेरी स्थिति विशलेषण करने की न रही होगी, । पर इसी प्रकार की भूमिका दी थी उसने अपनी वह बराबर ऊपर नीचे होता रहा, तब भी जब वह अपनी पतली सी आवाज में अपने बदनसीब स्वयं की बात कर रहा था एक क्षण के लिए भी शुरू से आखिर तक उसमें आत्मविश्वास नहीं था । वह वास्तव में जीवित होने से भी अधिक दुबला मूर्ख और निरुद्देश्य लग रहा था, बस केवल अन्तर यही था कि यदि वह जीवित होता तो वह मेरे सोने के कमरे में न होता, मैं उसे लात मार कर बाहर भगा देता ।'

'बेशक, ऐसे गरीब व्यक्ति भी होते हैं, 'महेन्द्र बोला ।'

'और उतना ही चांस है कि ऐसे भूत भी हों' मैं बोला ।

'और ऐसा लगता था इसी कारण उसने भूत विचरण करके स्वयं को परखने का प्रयास किया होगा । और भूत विचरण में भी उसने जो गड़बड़ी की थी उससे वह बहुत उदास था । उसे बताया गया था इसमें आनन्द है और वह आनन्द की खोज में ही आया था, परन्तु इसमें भी उसे एक और असफलता ही मिली थी । उसने स्वयं को अन्दर बाहर असफल घोषित किया था । वह बोला था और मुझे उसका पूरा विश्वास है कि, उसने अपने जीवन में या बाद में कभी कोई भी काम गड़बड़ किए बिना नहीं किया था और अनन्तकाल तक वह ऐसा ही रहेगा—'यदि उसे प्रेम या सहानुभूति नहीं मिली होती—और यह कह उसने मेरी ओर देखा । उसने कहा, चाहे यह कितनी भी अजीब बात लगे पर उसे कभी भी किसी ने भी इतनी सहानु-भूति दी है जितनी इस समय मैं दे रहा हूं । मैं फौरन समझ गया वह मुझ से क्या चाहता था मैंने तुरन्त उसे वहीं टोक दिया । हो सकता है तुम मुझे इस कारण कठोर या निर्दय समझो परन्तु उसके एकमात्र असली मित्र होने के कारण एक ऐसे कमजोर भूत की सहायता करना मेरे लिए शारीरिक रूप से सम्भव नहीं था । मैं तेजी से उठा और बोला, 'तुम फिजूल बातों पर दिमाग न खपाओ, तुम्हें फौरन इस स्थिति से निकलना है तुम हिम्मत करो और एक बार फिर से कोशिश करो, मैंने कहा और उसने कोशिश की !

'कोशिश की' सतीश कुमार बोला, कैसे ?'

'मुद्रायें' किलाचन्द बोला ।

'मुद्रायें ?'

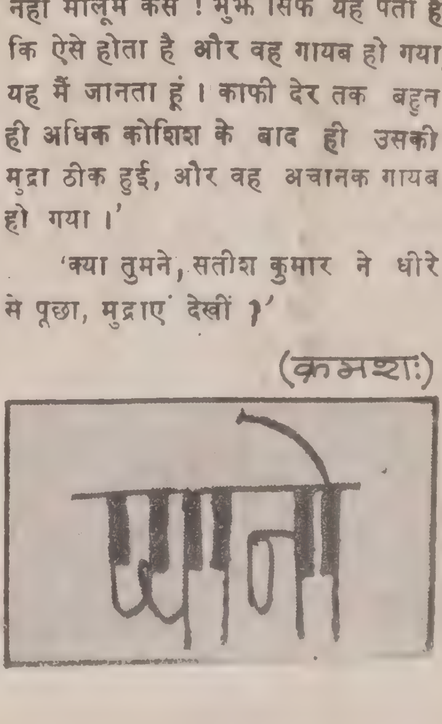
'हाथों से पेचीदा मुद्राओं का क्रम, वह इसी प्रकार आया था और इसी प्रकार उसे इससे दुबारा बाहर निकलना मतलब गायब होना था । ओह भगवान् क्या मुसीबत उठाई मैंने ।'

'परन्तु मुद्राओं का कोई क्रम कैसे मैंने पूछना चाहा ।

'मेरे प्यारे मित्र' किलाचन्द बोला, मेरी ओर मुड़ और खास तौर से मुझ से मुखातिब हो उसने कहा, 'तुम सब कुछ साफ-साफ जानना चाहते हो, मुझे नहीं मालूम कैसे ! मुझे सिर्फ यह पता है कि ऐसे होता है और वह गायब हो गया, यह मैं जानता हूं । काफी देर तक बहुत ही अधिक कोशिश के बाद ही उसकी मुद्रा ठीक हुई, और वह अचानक गायब हो गया ।'

'क्या तुमने, सतीश कुमार ने धीरे से पूछा, मुद्राएं देखीं ?'

(क्रमशः)



दीवाना-रंग भरो प्रतियोगिता नं. २७ का परिणाम ।

प्रथम पुरस्कार (1)—विवेक ज्योति तोमर—बीकानेर ।

द्वितीय पुरस्कार (3)—दिनेश कुमार वैलौर, सुरेन्द्र सिंह-दिल्ली, मीना कुमारी—नई दिल्ली ।

तृतीय पुरस्कार (10)—शिव कुमार बुलन्दशहर, रीतेश प्रकाश कुमार आदित्य—अमरावती, उत्तम कुमार शा—हावड़ा, मन्दीप सिंह गहीर-नासिक, उमेश शर्मा—दिल्ली, जीतेन्द्र भाटिया—कलकत्ता, नीतेश कुमार सोनी-कोटा, जयश्री पी. कुरूप—थाने, अनिल कौशिक—दिल्ली, विनय कुमार—दिल्ली।

सर्टीफिकेट (10)—मंजू कौशिक-दिल्ली, अजीत हरिश्चन्द्र कौर—बम्बई, अनिल कुमार गोयल—लुधियाना, आनन्द पोद्दार—जयपुर, इन्द्रजीत ग्रोवर—जालन्धर शहर, उदित सर्राफ—नई दिल्ली, ऋषि कपूर—कानपुर, गीता एच. डी.—बम्बई, हरन सैनी—नई दिल्ली, रोशन लाल गुरावा—दिल्ली ।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार (5) राज कुमार—गाजियाबाद, अमरदीप—दिल्ली, अमित श्रीवास्तव—दुर्ग, बिनोद कुमार जोशी—अम्बेर नाथ, सेहाज पाल सिंह—पटियाला ।

दीवाना के अंक १ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल ।

(निर्णय लाटरी द्वारा)

ज[1]	ब	ल[2]	पु[3]	र[4]
ड़	■	श्री[5]	रा	खी
चे[6]	लो	■	ला[8]	ला
त	ड़	फ	■	प
न[10]	ली	■	हाँ[11]	न

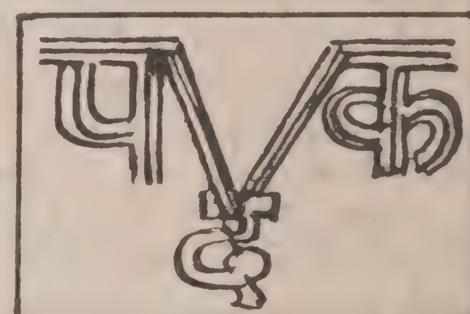
विजेता—कु० तृप्ति अरोरा द्वारा श्री देवदत्त अरोरा, दिल्ली दरवाजा, फैजाबाद ।

दीवाना-के अंक २ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल ।

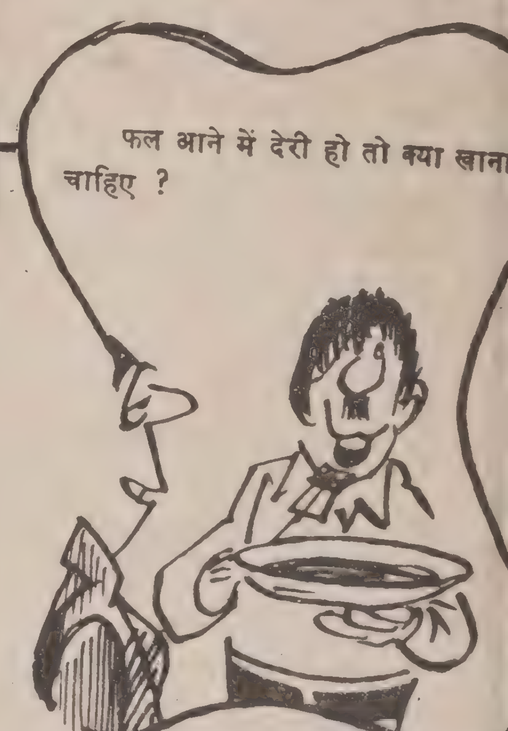
झु[1]	म	शै[2]	त[3]	लै[4]	थाँ[5]
म	■	त[6]	र	स	ता
को[7]	ल[8]	■	ती	■	या
■	कु[9]	[illegible]	[illegible]	च[10]	त
आ[11]	रा	■	गा[12]	ह	■
ई	■	म[13]	र	क	स

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता—राजेन्द्र के. लाड सुपुत्र श्री के. सी. लाड, स्टेट बैंक आफ इन्दौर, जवाहर गंज, जबलपुर (म. प्र.) ।



चित्र वर्ग पहेली २०रु. इनाम जीतिये



शब्द बनाइये—नीचे बेतरतीब से दिये अक्षरों को आप ठीक क्रम में रखें तो सार्थक शब्द बनेंगे। उन्हें ठीक क्रम में साथ दिये वर्गों में भरें। दायीं ओर के चित्र के सवाल का मजेदार जवाब पाने के लिए बायीं ओर भरे वर्गों को नीचे नये क्रम से रखें।

द च र क ट ा

र र म ह ख ा ो

ल ए वा शे न आ र नी दि

स र द ल म ा ो ा

सही हल

अन्तिम तिथि - १९. ३. ८३

नाम ————————

पता ————————

समाचार पंजीयन (केन्द्रीय) नियम १९६६ के ८ ब नियम (संशोधित) से सम्बन्धित प्रेस और पुस्तक अधिनियम की धारा १९-डी की उपधारा (बी) अन्तर्गत अपेक्षित दिल्ली के दीवाना तेज पाक्षिक नामक पत्र के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्यौरा।

(१) प्रकाशन स्थान : नई दिल्ली

(२) प्रकाशन की आवर्तिता : पाक्षिक

(३) मुद्रक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६

(४) प्रकाशक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६

(५) सम्पादक का नाम : विश्वबन्धु गुप्ता
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।

(६) उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के स्वामी और भागीदार या कुल पूंजी के एक प्रतिशत के अधिक के शेयर होल्डर हैं। दि डेली तेज प्राइवेट लि०, दिल्ली-६।

१. तेज एन्डोमेण्ट ट्रस्ट, बर्न वस्टन रोड, दिल्ली-६
२. श्रीमती रक्षा सरन, नटकांफ हाउस, दिल्ली।
३. मेजर जनरल हिज हाइनेंस नवाव सर सैय्यद रजा अली खां बहादुर हर और हाइनेंस रियासत जमानी बेगम खास वाग रामपुर।
४. राय बहादुर बनारसी दास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लि०, सदर बाजार, अम्बाला छावनी।
५. मे० बी० एस० हरीचन्द कपूर एण्ड सन्स, कोहिनूर सिनेमा, राटेड रोड, दादरा बम्बई।
६. मे० बिहारी लाल बैनीप्रसाद महालक्ष्मी मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली।
७. लाला कृष्ण दत्त, १३ बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
८. मे० अपर इण्डिया शुगर मिल्स लि० खतौली।
९. श्री विश्व बन्धु गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१०. श्री विजय कुमार १७, बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
११. श्री धर्मपाल गुप्ता, कॉटेज नं० ६, ओबराय एपार्टमेन्ट अलीपुर रोड, दिल्ली-११०००६।
१२. श्री रमेश गुप्ता, कॉटेज नं० ६, ओबराय एपार्टमेन्ट, अलीपुर रोड, दिल्ली-११०००६।
१३. कुमारी मंजुल गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१४. श्री सतीश गुप्ता, ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१५. श्री प्रेम बन्धु गुप्ता, डी-८५४, न्यू फ्रेन्डस कालोनी नई दिल्ली-११००६५।
१६. श्रीमती सोनादेवी गुप्ता, ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दि[ल्ली]

मैं पन्नालाल जैन घोषित करता हूं कि मेरी जानक[ारी] के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

पन्नालाल जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

१-३-८३

दीवाना-के अंक ३ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल ।

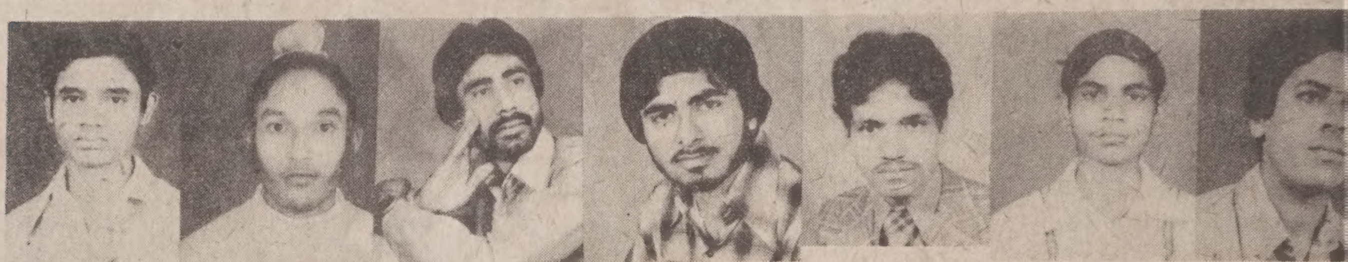
▨	अ	न	व	र	त
क	ब	▨	ह	ला	ल
म	र	ह	म	▨	वा
र	क	म	▨	खु	र
वं	▨	द	ध	द	भा
द	श	म	▨	रा	जी

बोलते अंक्षर

तालफड़ संवेदनशील प्रतिद्व...

(निर्णय लाटरी द्वारा)

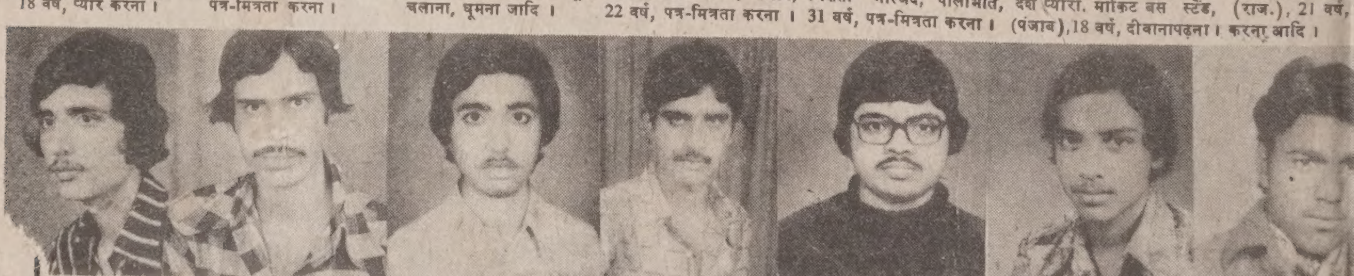
बिजेता—मधुर पोद्दार, 164 परतापपुरा, आगरा—282001,



मदन कुमार नारायण लाल रघुबीर सिंह साही, एफ. 817 अशोक कुमार स्वीटी, चेतन दास महेश वर्मा, गोविन्द नगर, कुमार प्रसाद नेपाल, नेपालाश्रम राज माली, मलाड (वेस्ट) बम्बई- राज कुमार टूरेजा,
जैस्पाल, वाशिम जिला अकोला, रघुबीर नगर, दिल्ली-27, 20 खुराना, (कलानौर), 23 वर्ष, कानपुर, 20 वर्ष, पत्र-मित्रता, (काठमांडो), 21 वर्ष, पत्र- 64, 17 वर्ष, क्रिकेट खेलना, मण्डी सिरसा, 19
18 वर्ष, फोटो ग्राफी, करना । वर्ष, फिल्में देखना । नई-नई चीजें संग्रह करना । करना आदि । मित्रता, दीवाना पढ़ना । दीवाना पढ़ना आदि । मित्रता, शतरंज खे...



आजाद खान, नया बाजार, चेतन दास नरपानी, सिन्धी रमेश कुमार, दुकान नं. 7, नई मदन वर्मा, बीज विक्रेता, सदर शमीम उर रहमान, इदरीशी, भगवान दास आहूजा, अपना वेद प्रकाश मिड्ढा,
लश्कर ग्वालियर, (म. प्र.), कालोनी भरथना, 20 वर्ष, मण्डी सिरसा, 16 वर्ष, स्कूटर बाजार समाना मण्डी, पंजाब, भिशती मस्जिद, पीलीभीत, देश प्यारा. मार्किट बस स्टैंड, (राज.), 21 वर्ष,
18 वर्ष, प्यार करना । पत्र-मित्रता करना । चलाना, घूमना आदि । 22 वर्ष, पत्र-मित्रता करना । 31 वर्ष, पत्र-मित्रता करना । (पंजाब), 18 वर्ष, दीवानापढ़ना । करना आदि ।



...गद शर्मा, नया बास, जयदेव गुप्ता मनोज, हरीगोपाल रणजीत बहादुर सिंहा, रूप जगदीशचन्द्र सेतिया, स्टेशन अशोक कुमार गुप्ता, म. गा. प्रकाश कुमार अग्रवाल, झरिया महबूब अहमद, सवि...
20 वर्ष, पत्रव्यव-मजुमदार रोड. 24 वर्ष, कला कुंज सलेमपुर, (बिहार) रोड परासिया, 18 वर्ष, रोड, टीटागढ़-24 परगना, 18 धनबाद, 20 वर्ष, स्कूटर उदयपुर, (राज.),
...आदि । पत्रिका छापना आदि । 18 वर्ष, पढ़ना आदि । कामिक्स पढ़ना । वर्ष, पत्र-मित्रता करना । दौड़ाना, सेवा करना । हीरो बनना ।



...म्पी' शाह-सुरिन्द्र सिंह खुराना, नई मंडी, सुधीर चितावार, कमिशन विनोद कुमार जैन, 21 डिफेंस उमेश शर्मा 'चन्द्र' इन्दौर,
..., 16 वर्ष, सिरसा, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता, एजैन्ट, धर्माबाद, 17 वर्ष, कालोनी, नई दिल्ली-24, (म. प्र.) 24 वर्ष, ऐतिहासिक
...चपकाना । घूमना आदि । पत्र-मित्रता करना घूमना । 20 वर्ष, टिकट संग्रह करना । चित्र संग्रह करना ।

स

सही ह...

...वाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

नई दिल्ली में ...

भेजने का पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ... बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ——————

पता ——————

शौक ——————



सदा आगे ही आगे

नवें एशियाई खेलों का शानदार आयोजन करने के लिए भारत को दुनिया भर से बधाई सन्देश प्राप्त हो रहे हैं।

बड़े-बड़े स्टेडियम देखते ही देखते तैयार कर लिए गए। रंगीन दूरदर्शन के माध्यम से अपने देश के भी और अन्य देशों के भी लाखों-करोड़ों लोगों ने इन खेलों का भरपूर आनन्द उठाया। इन सब कार्यों को सुचारु रूप से सम्पादित करने के लिए कम्प्यूटरों, इलेक्ट्रानिक एक्सचेंजों, माइक्रोवेव और उपग्रह प्रणाली जैसे नवीनतम वैज्ञानिक साधनों का उपयोग अत्यन्त कुशलतापूर्वक किया गया।





यह इस बात का बड़ा सुन्दर उदाहरण है कि मिले-जुले प्रयास और कठिन परिश्रम से कितनी बड़ी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

यदि हम इसी भावना और उत्साह से काम करें तो राष्ट्र के विकास के अन्य क्षेत्रों में भी इतनी बड़ी सफलता क्यों नहीं प्राप्त कर सकते?

आइए हम सब मिल कर एक सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण में जुट जाएं।

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82